हिंदी (केंद्रिक)

कक्षा–12

प्रतिदर्श प्रश्नपत्र–I

समय : 3 घंटे **पूर्णांक** : 100

1. **निम्नलिखित काव्यांश की सप्रसंग व्याख्या कीजिए :** **5**

हमारी यश–गंध दूर–दूर तक फैली है,
भ्रमरों ने आकर हमारे गुण गाए हैं,
हम पर बौराए हैं।
सब की सुन पाई है
जड़ मुस्काई है!

अथवा

दोस्त कठिन है यहां किसी को भी
अपनी पीड़ा समझाना।
दर्द उठे तो, सूने पथ पर
पांव बढ़ाना चलते जाना।

2. **निम्नलिखित काव्यांशों में किन्हीं दो का काव्य–सौंदर्य स्पष्ट कीजिए :** **3+3=6**

(i) जहां तुम्हारे चरण वहीं पर
पद–रज बनी पड़ी हूँ मैं।
मेरा निश्चित मार्ग यही है
ध्रुव–सी अटल खड़ी हूँ मैं।

(ii) ऐसे आओ
जैसे गिरि के शृंग शीश पर
रंग रूप का क्रीट लगाए
बादल आए।

(iii) ईर्ष्या, अहं, स्वार्थ, घृणा अविश्वासलीन
संख्यातीत शंख–सी दीवारें उठाता है
अपने को दूजे का स्वामी बताता है
देश की कौन कहे
एक कमरे में
दो दुनिया रचाता है

3. **किन्हीं दो प्रश्नों के संक्षिप्त उत्तर दीजिए :** **2+2=4**

(i) माखनलाल चतुर्वेदी ने किसान की भुजाओं पर सौ–सौ युग, सौ–सौ हिमालय और सौ–सौ गंगा न्योछावर करने की कामना क्यों की है?

(ii) तुलसीदास मन, कर्म और वचन से किस नियम का पालन करना चाहते हैं और क्यों?

(iii) शिवमंगल सिंह 'सुमन' ने मिट्टी को ''बच्चों की गुड़िया–सी'' क्यों कहा है ?

4. **निम्नलिखित गद्यांश को पढ़कर तत्संबंधी प्रश्नों के उत्तर दीजिए :**

भीतर से कुछ–कुछ बटा हुआ और बाहर से बिल्कुल एक, भारत की यह विशेषता बहुत पुरानी है। यह ठीक है कि प्रांतीयता के जोश में आकर कोई–कोई क्षेत्र राष्ट्र की एकता से अलग होकर अपना स्वतंत्र अस्तित्व कायम करने के लिए जब–तब कोशिश करते रहे हैं, मगर यह भी ठीक है कि सारे देश को एकछत्र शासन (चक्रवर्ती राज्य) के अंदर लाने का सपना भी यहाँ बराबर मौजूद रहा है। देश की इस मौलिक एकता के भाव ने प्रांतीयता के सामने कभी भी हार नहीं मानी।

(i) भारत की पुरानी विशेषता क्या रही है ? इसे आज के संदर्भ में आप कितना उपयुक्त समझते हैं ? 2

(ii) प्रांतीयता के सामने हार न मानने वाली मौलिक एकता की भावना को स्पष्ट कीजिए। 2

(iii) उपर्युक्त अवतरण पाठ में किस संदर्भ में कहा गया है ? 2

अथवा

दूर अंतर में कुछ स्पर्श हुआ, पर वह स्पर्श सूक्ष्म था, यूँ ही संकेत–सा। शब्द चक्कर काटते रहे–न हिलना, न झुकना और तब आया यह वाक्य–न हिलना, न झुकना जीवन की स्थिरता का, दृढ़ता का चिह्न है और वह वीर पुरुष है जो न हिलता है, न झुकता है।

(i) लेखक को कैसे स्पर्श का अनुभव हुआ ? वह स्पर्श किस बात का संकेतक था ? 2

(ii) लेखक ने क्यों कहा, 'वह वीर पुरुष है जो न हिलता है, न झुकता है' 2

(iii) उपर्युक्त अवतरण पाठ में किस संदर्भ में कहा गया है? 2

5. **किन्हीं तीन प्रश्नों के उत्तर दीजिए :** **3+3+3=9**

(i) जैनेंद्र ने 'तत्सत' कहानी में अंश और संपूर्ण के संबंध का किस प्रकार स्पष्टीकरण किया है ?

(ii) 'चित्र' पाठ में किसने और क्यों कहा–'हमारे हंसों में कौआ नजर आता है ?'

(iii) भगवती शरण सिंह ने क्यों कहा कि भारत की नदियां मोक्षदायिनी नहीं रहीं ?

(iv) महादेवी वर्मा के अनुसार नीलू के स्वभाव की कौन–सी विशेषताएँ उसे अन्य कुत्तों से अलग करती हैं ?

6. 'विविधा' भाग –2 के आधार पर किन्हीं तीन प्रश्नों के संक्षिप्त उत्तर दें। 2+2+2=6

(i) अरूमुगम को 'वीर–चक्र' क्यों प्रदान किया गया ?

(ii) दफ्तर के कर्मचारी, फौजी अफसरों और टंडन जी की बातचीत खिड़की के पास खड़े होकर क्यों सुन रहे थे ?

(iii) गूँगा गाँव छोड़कर क्यों चला गया ?

(iv) धर्मवीर भारती को पत्र क्यों लिखना पड़ा ?

7. 'सत्य किरण' एकांकी में आधुनिक साहित्यकार, पुलिस–अधिकारी, समाज–सेविका और वैज्ञानिकों की किन अंतर्विरोधी प्रवृत्तियों का पता चलता है ? स्पष्ट कीजिए 4

अथवा

'रमन का वात्सल्य' प्रेरक प्रसंग में लेखक ने चंद्रशेखर वेंकटरमन के किन गुणों का उल्लेख किया है? स्पष्ट कीजिए।

8. 'विराटा की पद्मिनी' के आधार पर किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर दीजिए : 3+3=6

(i) कालपी के नवाब अलीमर्दान की सर्वाधिक उल्लेखनीय विशेषता क्या है ? सोदाहरण स्पष्ट कीजिए ?

(ii) विराटा के पतन के बाद अलीमर्दान द्वारा पीछा किए जाने पर कुमुद ने क्या किया और क्यों ?

(iii) देवी सिंह ने कफनसिंह बुंदेला के रूप में युद्ध के दौरान क्या भूमिका निभाई ?

9. 'विराटा की पद्मिनी' उपन्यास के पात्र कुमुद की किन्हीं चार विशेषताओं का सोदाहरण उल्लेख कीजिए। 4

अथवा

'विराटा की पद्मिनी' का उद्देश्य स्पष्ट कीजिए।

10. रेखांकित पदों का पद–परिचय दीजिए : 3

<u>भाई</u> ने मुझसे <u>पूछा</u>, <u>कोई</u> तुम्हारे साथ आया है ?

11. निर्देशानुसार वाच्य–परिवर्तन कीजिए। 3

(i) रावण द्वारा सीता का हरण किया गया। (कर्तृवाच्य में)

(ii) बीमार यात्री ऊँचे पर्वत पर चढ़ न सका। (भाववाच्य में)

(iii) सुभाष चंद्र बोस के आह्वान पर युवकों ने रक्तदान किया। (कर्मवाच्य में)

12. निम्नलिखित में से किन्हीं दो का समास–विग्रह कीजिए और समासों के नाम भी लिखिए : 2+2=4

पथभ्रष्ट, कर–कमल, चक्रधर, त्रिलोकी।

13. निम्नलिखित अशुद्ध वाक्यों को शुद्ध कीजिए : 1+1+1=3

(i) पुत्र ने पिताजी के चरणों के लिए सिर झुका दिया।

(ii) हमने इसको विचार–विमर्श किया।

(iii) मेरे को गुरुजी ने क्यों बुलाया है ?

14. निर्देशानुसार वाक्य–रूपांतरण कीजिए : 1+1+1+1=4

(i) विद्यार्थी पुस्तक खरीदने बाजार गया। (मिश्रित वाक्य में)

(ii) जो व्यक्ति पुरुषार्थी होता है, उसके लिए कोई कार्य कठिन नहीं होता। (सरल वाक्य में)

(iii) वह विद्यालय में आया, जहाँ उसने कहानी सुनाई। (संयुक्त वाक्य में)

(iv) बीमारी के कारण स्नेहलता ने परीक्षा नहीं दी। (प्रश्नवाचक वाक्य में)

15. (i) निम्नलिखित वाक्य का विश्लेषण कीजिए : 2

ममता की बेटी सुधा रोज क्रिकेट खेलती है।

(ii) निम्नलिखित वाक्यों का एक वाक्य में संश्लेषण कीजिए : 2

गाय का रंग काला था। खेत में गेहूँ की हरी फसल खड़ी थी

गाय ने फसल को चरना शुरू कर दिया।

16. (क) निम्नलिखित लोकोक्तियों में से किन्हीं दो का वाक्यों में इस प्रकार प्रयोग कीजिए कि उनके अर्थ स्पष्ट हो जाएँ : 1+1=2

(i) अधजल गगरी छलकत जाए।

(ii) आ बैल मुझे मार।

(iii) एक हाथ से ताली नहीं बजती।

(ख) निम्नलिखित मुहावरों में से किन्हीं दो का वाक्यों में इस प्रकार प्रयोग कीजिए कि उनके अर्थ स्पष्ट हो जाएँ : 1+1=2

(i) ईंट का जवाब पत्थर से देना।

(ii) आँखें बिछाना।

(iii) कान पर जूँ न रेंगना।

17. **निम्नलिखित गद्यांश को ध्यान से पढ़िए और तत्संबंधी प्रश्नों के उत्तर दीजिए :**

प्रकृति और व्यक्ति के संबंधों में विकार आ रहा है। व्यक्ति प्रकृति से दूर हो गया है। जनसंख्या–विस्फोट से तथा प्रदूषण के कुप्रभाव से प्रकृति की शोभा पर संकट के बादल मंडराने लगे हैं। ऐसी विपरीत स्थिति में भी प्रकृति का सौंदर्य वसंत के आगमन पर खिल उठता है। विस्मय होता है कि आजकल लोगों को वसंत के आगमन का भी आभास नहीं होता। पुष्प वाटिकाओं में रंग–बिरंगे फूलों की चटख और महक से वासंती पवन झूम उठता है। पुष्प पंखुड़ियों पर तितलियों के नृत्य मन मोह लेते हैं। भ्रमरों का मधुर गुंजन आनंद की वृष्टि करता है। ऋतुराज के स्वागत में आम की डाल पर कोकिला भी मधुर तानें छेड़ती है। मोरनियों के झुंड से घिरा मोर मस्ती में नाचता है।

प्रकृति की यह छटा लोगों को नसीब नहीं होती क्योंकि उनके मन में प्रकृति–प्रेम शेष नहीं रहा। व्यक्ति प्रकृति–प्रेम के अभाव में मानसिक दबावों में जी रहा है। अतः वसंत के आगमन पर प्रत्येक व्यक्ति के मन में उसका स्वागत करने की भावना जागनी चाहिए।

(i) प्रकृति की शोभाश्री पर संकट के बादल क्यों मंडरा रहे हैं ? 1

(ii) विपरीत परिस्थिति में भी प्रकृति की विशेषता क्या है ? 1

(iii) लेखक को विस्मय क्यों होता है ? 1

(iv) प्रकृति की कौन–सी छटा लोगों को नसीब नहीं होती ? 1

(v) मानसिक दबावों से छुटकारा पाने की दवा क्या है ? 1

18. **निम्नलिखित काव्यांश को ध्यान से पढ़िए और तत्संबंधी प्रश्नों के उत्तर दीजिए :**

थका–हारा सोचता मन–सोचता मन।
उलझती ही जा रही है एक उलझन
अंधेरे में अंधेरे से कब तलक लड़ते रहें
सामने जो दिख रहा है, वह सचाई भी कहें।
भीड़ अंधों की खड़ी खुश रेवड़ी खाती
अंधेरे के इशारों पर नाचती–गाती।
थका हारा सोचता मन–सोचता मन।
भूखी प्यासी कानाफूसी दे उठी दस्तक
अंध बन जा झुका दे तम–द्वार पर मस्तक
रेवड़ी की बाँट में तू रेवड़ी बन जा
तिमिर के दरबार में दरबान–सा तन जा।
    थका हारा, उठा गर्दन–जूझता मन
    दूर उलझन! दूर, उलझन! दूर उलझन!

चल खड़ा हो पैर में यदि लग गई ठोकर
खड़ा हो संघर्ष में फिर रोशनी होकर
मृत्यु भी वरदान है संघर्ष में प्यारे
सत्य के संघर्ष में क्यों रोशनी हारे।
देखते ही देखते तम तोड़ता है दम
और सूरज की तरह हम ठोंकते हैं खम।

(i) थके हारे मन की उलझन क्या है ? 1

(ii) अंधेरे में अंधों की भीड़ खुश क्यों है ? 1

(iii) भूख–प्यास की विवशता का क्या परामर्श है ? 1

(iv) जुझारू मन ने सुझाव क्यों नहीं माना ? 1

(v) संघर्ष में विजय किसे मिलती है ? 1

19. आपके पड़ोस में कोई आतंकवादी रह रहा है। आपने उस मकान में कुछ आतंकवादी गतिविधियाँ देखी हैं। आप अपने नगर के उच्च पुलिस अधिकारी को पत्र लिखकर इसकी पूर्ण जानकारी दीजिए ताकि किसी दुर्घटना से पूर्व ही उचित कार्रवाई हो सके। 5

अथवा

घायल सुरक्षाकर्मी को एक पत्र लिखिए, जो आपका परिचित, संबंधी या रिश्ते का भाई है।

20. निम्नलिखित में से किसी एक विषय पर लगभग 250 शब्दों में निबंध लिखिए : 10

(i) विविधता में एकता–भारत की विशेषता

(ii) मंगल ग्रह की यात्रा

(iii) बाल मजदूरी–एक अभिशाप

(iv) लोकतंत्र में चुनाव

(v) परहित सरिस धरम नहिं भाई।

हिंदी (केंद्रिक)

कक्षा–12

प्रतिदर्श प्रश्नपत्र–I

अंक–योजना उत्तर–संकेत और मूल्य–बिंदु

अंक–विवरण

1. **किसी एक काव्यांश की सप्रसंग व्याख्या अपेक्षित है।**

(i)	रचना और रचनाकार का नामोल्लेख	½+½ = 1
(ii)	प्रसंग–पूर्वापर संबंध–कथन	1
(iii)	व्याख्या	2½
(iv)	शुद्ध भाषा–संप्रेषण	½
		कुल अंक : 5

(i) 'जड़ की मुस्कान', हरिवंश राय बच्चन

(ii) प्रगति करने पर अपने मूलाधार को भूल जाने वाले को उनके मूलाधार का महत्त्व समझाने के लिए वृक्ष के माध्यम से जड़ की मुस्कान स्पष्ट करती है।

(iii) तने के विकास में डालियों, टहनियों और पत्तियों के बाद कली और पुष्प अपनी–अपनी शेखी बघारते हैं। डालियां तने की, टहनी डालों की, पत्तियाँ टहनी की, कली पत्तियों की और पुष्प कली की उपेक्षा करते हैं। पुष्प को गंध और रूप पर गर्व है। तभी दूर–दूर तक हवा महक रही है। भ्रमर भी उसका गुणगान कर रहे हैं, पुष्प की गर्वीली वाणी पर जड़ मुस्कराती है और रहस्य बताती है। वृक्ष का विकास और अस्तित्व जड़ पर आधारित है। जड़ निर्जीव नहीं, सजीव है।

अथवा

(i) 'हँसा जोर से' सर्वेश्वर दयाल सक्सेना।

(ii) दुनिया को व्यक्ति का सुख और दुख फूटी आँख नहीं भाता। लोग उसके शोक, गम और आनंद में भागीदारी नहीं निभाते। जो लोग दुनिया के साथ अपना सुख–दुख बाँटना चाहते हैं, उन लोगों को कवि सलाह देता है।

(iii) इस विचित्र दुनिया को अपनी पीड़ा समझाना अत्यंत कठिन कार्य है। इसलिए इसके सामने अपनी दर्द–कथा पर समय नष्ट मत कीजिए। हाँ, दर्द तो गर्दन उठाएगा और चाहेगा कि दुनिया को सुनाऊँ, कोई न कोई सुनेगा, अवश्य सुनेगा। कवि का सच्चा परामर्श है कि ऐसी स्थिति में निर्जन पथ पर कदम बढ़ाता चल, गति में ही प्रगति है, प्रगति में पीड़ा का निदान है, जीवन की इस प्रगतिशील कदमताल में दुख के दिन बीत जाएंगे। सुख मिलेगा। रहीम कवि ने भी समानांतर पंक्तियों में कहा है :

''रहिमन निज मन की व्यथा, मन ही राखो गोय
सुनि अठि लैंहैं लोग सब, बांट न लैंहैं कोय।''

2. किन्हीं दो काव्यांशों के भाव–सौंदर्य और शिल्प–सौंदर्य की प्रस्तुति अपेक्षित है☐ 3+3=6

(क)
- पति–पत्नी के अटल दाम्पत्य जीवन का कथन
- 'पद–रज' और 'ध्रुव–सी' 'अटल' में रूपक और उपमा अलंकार का सौंदर्य प्रकट हुआ है।
- 'पद–रज' में सनातन संबंध अभिव्यक्त हुआ है तो 'ध्रुव–सी' में उपमा के द्वारा एकनिष्ठता व्यक्त हुई है।

(ख)
- तन मन के स्वच्छ और उज्ज्वल जीवन के आह्वान का कथन।
- 'शृंगशीश' में अनुप्रास और रूपक अलंकार, 'रंगरूप का क्रीट' में भी रूपक अलंकार
- आगमन का बादल जैसा रंगीन रूप, हिमगिरि के शिखर पर शोभायमान सौंदर्य का कथन। (भाव–सौंदय 1½, शिल्प–सौंदर्य 1½)

3. किन्हीं दो प्रश्नों के संक्षिप्त उत्तर दीजिए : 2+2=4

(i) किसान की भुजाएँ श्रम करके अन्न का उत्पादन करती हैं। यही कारण है कि कवि ने उसकी भुजाओं पर सौ–सौ युग, सौ–सौ हिमालय और सौ–सौ गंगा न्योछावर करने की कामना की है।

(ii) वह किसी से कुछ न मांगे, निरंतर परोपकार करता रहे, उसकी कथनी–करनी में अंतर न हो, कटु वचन सुनकर भी उसे क्रोध न आए, सुख–दुख उसे विचलित न करें वह नियमों का पलना करना चाहता है ताकि स्थायी रूप में राम की भक्ति प्राप्त हो।

(iii) बच्चों की गुड़िया–सी भोली मिट्टी का अस्तित्व क्या है? हवा उसे उड़ा देती है और पानी उसे गला देता है।

4. (i) अनेकता में एकता की भावना भारत की पुरानी सांस्कृतिक विशेषता रही है। आज के संदर्भ में भी यह प्रासंगिक है क्योंकि हमारे देश की विविधता ही इसकी विशेषता है। 2

(ii) भारत में प्रांत–विशेष के लोग अपने अलग अस्तित्व के लिए आंदोलन करते रहे हैं। उसी के साथ देशवासियों की यह भावना भी बलवती रही कि हम एक राष्ट्र के रूप में गणतांत्रिक शासन में रहें। चक्रवर्ती राज्य का संकल्प इसका साक्ष्य है। इस मौलिक एकता ने प्रांतीयता को पनपने नहीं दिया। 2

(iii) लेखक पाठ में भारत की विशेषताओं की चर्चा करते हुए उसकी भिन्नताओं का उल्लेख करता है और उसे लगता है कि भारत चाहे भीतर से कटा–फटा सा लगता हो पर वह एक ही देश है। 2

अथवा

(i) लेखक हरे–भरे पेड़ और एक ठूंठ पर हवा का प्रभाव देखते–देखते इस नतीजे पर पहुँचा कि ठूँठ पर इसका कोई असर नहीं होता। 'न हिलना', 'न झुकना' शब्द ही उसके अंतरमन में कौंधता रहे जो संकेत दे रहे थे कि मनुष्य का व्यक्तित्व कैसा होना चाहिए। 2

(ii) लेखक उसे वीर पुरुष मानता है, जिसके जीवन में स्थिरता है। वह अपने निश्चय पर अटल रहता है। वह अपने लक्ष्य से इधर–उधर नहीं होता। हिलता तक नहीं है। दृढ़ रहता है। विपरीत परिस्थिति हो या आसुरी शक्ति, वह उनके सामने नत–मस्तक नहीं होता। 2

(iii) हरे–भरे पेड़ और निर्जीव ठूंठ के माध्यम से मनुष्य के स्वभाव की विशेषता बताने के संदर्भ में 2

5. **केवल तीन प्रश्नों के उत्तर देना अपेक्षित हैं। प्रत्येक उत्तर में दो मूल बिंदुओं की अभिव्यक्ति हो।** **कथ्य 3+3+3=9**

(i) अंश और संपूर्ण का संबंध पेड़–पौधों और पशुओं के उदाहरण देकर वन की समग्रता का स्पष्टीकरण अपेक्षित।

(ii) शंकराचार्य ने चित्रकार से कहा कि हंस का चित्र हमने भी बनाया था लेकिन लोकतंत्र में हमारे हंस में कौआ नजर आता है। हमारी कूचियों में सांप्रदायिकता के रंग बताए जाते हैं। अब लोकतंत्र में लोक के हाथों हंस का चित्र बनने दो।

(iii) जनसंख्या और जन कुकृत्यों के विवरण के साथ महानदियों के प्रदूषित जल के स्पष्टीकरण से नदियों की मोक्षदायिनी शक्ति का विनाश बताना है।

(iv) नीलू की सहज चेतना, संप्रेषणप्रिय व्यवहार, आत्म सम्मान, स्वामिभक्ति और अहिंसक सद्व्यवहार के उदाहरणों से उक्ति सिद्ध की गई हो।

6. **विविधता के आधार पर केवल तीन प्रश्नों के उत्तर कारण और कार्य के स्पष्टीकरण–सहित अपेक्षित :** **कथ्य 2+2+2=6**

(i) अरूमुगम के शौर्यपूर्ण बलिदान के कारण का उल्लेख अशोक चक्र के लिए किया हो।

(ii) वे टंडन जी की धीरता, दृढ़ता और अंग्रेज फौजी अफसरों के सामने उनकी शांत निर्भीकता देख–सुन रहे थे।

(iii) गूंगा अपनी तैराकी अथवा कला–बल से उस बच्चे को तुरंत न निकाल सका। तीन प्रयासों में निर्जीव–सी सफलता के कारण या अन्य कारण; तर्क–सहित अपेक्षित।

(iv) किसी शोध करने वाले ने भारती जी से उनके साहित्य–परिचय के लिए अनुरोध किया था। अतः उन्होंने पत्र लिखा।

7. **'सत्य किरण' एकांकी के पात्रों की अंतर्विरोधी प्रवृत्तियों का संक्षिप्त परिचय अपेक्षित।**

कथ्य 3+ अभिव्यक्ति 1=4

अथवा

'रमन का वात्सल्य' प्रेरक प्रसंग के आधार पर रमन के तीन गुणों का उल्लेख अपेक्षित।

8. **'विराटा की पद्मिनी' के आधार पर किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर अपेक्षित हैं।** कथ्य 2+ भाषा 1 (2×3=6)

(i) अलीमर्दान की सर्वाधिक उल्लेखनीय विशेषता यह है कि वह हिंदुओं की धार्मिक भावनाओं पर आघात नहीं करता। दुर्गा मंदिर पर उसने तोप से आक्रमण नहीं किया–देवीसिंह ने किया, उत्तर में यह स्पष्ट किया गया हो।

(ii) कुमुद बेतवा नदी की ढालू चट्टान के छोर तक पहुँच गई। उसने 'मलिनिया फुलवा लाओ नंदन बन के' लोकगीत गाया और बेतवा नदी में छलांग लगा दी। अपने प्रेमी के वियोग में आत्म–बिलदान दिया और शत्रु से स्वयं को बचाया।

(iii) देवीसिंह छद्म वेश में कफनसिंह बुंदेला के रूप में रामनगर गढ़ के द्वार पर चिल्लाया। प्रहरी आ गए तथा लोचनसिंह और उसके साथियों ने गढ़ विजय कर लिया।

9. कुमुद का परिचय–अनन्य सुंदरी, लोगों की आस्था का केंद्र, देवी का अवतार, सत्यवती, गुणवती, अनन्य प्रेमिका, निर्भीक और पवित्र नारी–आदि में से किन्हीं चार विशेषताओं का उल्लेख सोदाहरण अपेक्षित। 1+1+1+1=4

अथवा

उपन्यास का प्रमुख उद्देश्य भारत के प्राचीन इतिहास के गौरवशाली पन्नों का प्रदर्शन कर नई पीढ़ी में देशप्रेम, बलिदान भावना और आदर्श भावना का संचार करना है।

10. **भाई ने**–जातिवाचक संज्ञा, पुल्लिंग, एक वचन, कर्ताकारक, 'पूछा' क्रिया का कर्ता। 1

पूछा–सकर्मक क्रिया, पुल्लिंग, एक वचन, भूतकाल, कर्तृवाच्य, पूर्ण पक्ष। 1

कोई–अनिश्चयवाचक सर्वनाम, पु., एक वचन, कर्ता कारक, 'आया है', क्रिया का कर्ता। 1

11. (i) रावण ने सीता का हरण किया। 1

(ii) बीमार यात्री से ऊंचे पर्वत पर चढ़ा नहीं गया। 1

(iii) सुभाषचंद्र बोस के आह्वान पर युवकों द्वारा रक्तदान किया गया। 1

12. **किन्हीं दो समासों का विग्रह और नामोल्लेख अपेक्षित है–** 2+2=4

पथभ्रष्ट	–	पथ से भ्रष्ट	–तत्पुरुष
कर–कमल	–	कमल के समान कर	–कर्मधारय
चक्रधर	–	चक्र को धारण करता है जो (श्रीकृष्ण अथवा विष्णु)	–बहुब्रीहि
त्रिलोकी	–	तीन लोकों का समूह	–द्विगु

13. (i) पुत्र ने पिता के चरणों में सिर झुका दिया।

(ii) हमने इस पर विचार–विमर्श किया।

(iii) मुझे गुरुजी ने क्यों बुलाया है ?

14. (i) चूँकि विद्यार्थी को पुस्तक खरीदनी थी इसलिए वह बाजार गया। 1

(ii) पुरुषार्थी व्यक्ति के लिए कोई कार्य कठिन नहीं होता। 1

(iii) वह विद्यालय में आया और उसने कहानी सुनाई। 1

(iv) क्या बीमारी के कारण स्नेहलता ने परीक्षा नहीं दी ? 1

15. **(i)**

उद्देश्य		विधेय		
कर्ता का विस्तार	कर्ता	कर्म	क्रिया	विस्तार
ममता की बेटी	सुधा	क्रिकेट	खेलती है	रोज

(ii) काली गाय ने खेत में खड़ी हरी फसल को चरना शुरू कर दिया। 2

16. (क) **किन्हीं दो लोकोक्तियों के सार्थक प्रयोग पर अंक दिए जाएं :** **1+1=2**

(i) थोड़ी विद्या या धन से घमंड में आना–अर्थ पर ध्यान दें।

(ii) जानबूझकर मुसीबत मोल लेना–अर्थ पर ध्यान दें।

(iii) संघर्ष दोनों पक्षों की भूल से होता है–अर्थ पर ध्यान दें।

(ख) **किन्हीं दो मुहावरों के सार्थक प्रयोग पर अंक दिए जाएं।** **1+1=2**

(i) दुष्ट से दुष्टता का व्यवहार करना।–अर्थ पर ध्यान दें।

(ii) आदर सत्कार करना।–अर्थ पर ध्यान दें।

(iii) कुछ भी प्रभाव न होना।–अर्थ पर ध्यान दें।

17. (i) जनसंख्या–विस्फोट और प्रदूषण के कारण प्रकृति की शोभा पर संकट है। 1

(ii) प्रकृति का सौंदर्य खिल उठता है। 1

(iii) लोगों को आजकल वसंत के आगमन का भी आभास नहीं होता। 1

(iv) पुष्पों का सौंदर्य कोकिला के गीत, मोर के नृत्य और भ्रमरों के मधुर गुंजन की छटा लोगों को नसीब नहीं होती। 1

(v) प्रकृति–प्रेम मानसिक दबावों से मुक्ति दिला सकता है। 1

18. (i) अंधेरे से संघर्ष जारी रखें या नहीं, उलझन थी। 1

(ii) अंधेरे के इशारों पर नाच–गाकर रेवड़ी खाकर खुश थी। 1

(iii) परामर्श था अंधेरे के अधीन हो जा। 1

(iv) सत्य से संघर्ष में झुकना अभिशाप है, मर जाना वरदान है। 1

(v) जो सत्य के संघर्ष में प्रयासरत रहता है, उसे विजय मिलती है। 1

19. पत्र लेखन — पत्र की औपचारिकताएं 2
पत्र का वृत्तांत–विवरण 3=5

20. निबंध लेखन — प्रस्तावना 1
विषय– प्रतिपादन (4 बिंदुओं का विवेचन) 6
उपसंहार 1
भाषा–शैलीगत मौलिकता 2= 10

हिंदी (केंद्रिक)
कक्षा–12
प्रतिदर्श प्रश्नपत्र–II

समय : 3 घंटे **पूर्णांक** : 100

1. **निम्नलिखित काव्यांश की सप्रसंग व्याख्या कीजिए :** **5**

सिंही की गोद से छीनता है शिशु कौन
मौन भी क्या रहती वह रहते प्राण ?
रे अजान
एक मेष माता ही
रहती है निर्निमेष–
दुर्बल वह–
छिनती संतान जब,
जन्म पर अपने अभिशप्त
तप्त आंसू बहाती है।
किंतु क्या ?
योग्य जन जीता है,
पश्चिम की उक्ति नहीं,
गीता है, गीता है,
स्मरण करो बार–बार
जागो फिर एक बार।

अथवा

काहे रे बन खोजन जाई
सर्व निवासी सदा अलेपा तोहि संग समाई।।
पुहुप मध्य ज्यों बास बसत है, मुकुर मांहि जस छांई
जैसे ही हरि बसै निरंतर घट ही खोजो भाई।।

बाहर भीतर एकै जानो यह गुरु ज्ञान बताई।
भन 'नानक' बिन आपा चीन्हे मिटे न भ्रम की काई।।

2. **निम्नलिखित काव्यांशों में किन्हीं दो का काव्य–सौंदर्य स्पष्ट कीजिए :** **3+3=6**

(क) विरचे शिव, विष्णु, विरंचि विपुल
अगणित ब्रह्मांड हिलाए है
पलने में प्रलय झुलाया है
गोदी में कल्प खिलाए हैं।

(ख) मैंने उसको
जब जब देखा
लोहा देखा
लोहे जैसे
तपते देखा
गलते देखा
ढलते देखा
मैंने उसको
गोली जैसा
चलते देखा।

(ग) पर न जाने क्यों–
पराजय ने मुझे शीतल किया,
और हर भटकाव ने गति दी
नहीं कोई था
इसी से सब हो गए मेरे
मैं स्वयं को बांटती ही फिरी
किसी ने मुझको नहीं यति दी।

3. **निम्नलिखित में से किन्हीं दो प्रश्नों के संक्षिप्त उत्तर दीजिए :** **2+2=4**

(i) 'ये अनाज की पूलें तेरे कांधे झूलें' कविता में कवि ने वायु को किसान की उज्ज्वल गाथा और सूर्य को उसका रथ क्यों बताया है ?

(ii) 'वीरांगना' कविता में भारतीय नारी की किन–किन विशेषताओं को दर्शाया गया है ?

(iii) कवि क्लर्क–जीवन की किन–किन जटिलताओं को जीने के लिए बाध्य है? 'मैं और मेरा पिट्‌ठू' नामक कविता के आधार पर स्पष्ट कीजिए।

4. **निम्नलिखित गद्यांश को पढ़कर तत्संबंधी प्रश्नों के उत्तर दीजिए :**

जीवन में देह है, जीवन में आत्मा है। देह है नाशशील और आत्मा है शाश्वत, तो आत्मा को हिलना–झुकना नहीं और देह को निरंतर हिलना–झुकना ही है; नहीं तो हम हो जाएंगे रामलीला के रावण की तरह, जो बांस की खपच्चियों पर खड़ा रहता है–न हिलता है, न झुकता है। हमारे विचार लचीले हों, परिस्थितियों के साथ वे समन्वय साधते चलें, पर हमारे आदर्श स्थिर हों। हमारे पैरों में जीवन के मोर्चे पर डटे रहने की भी शक्ति हो और स्वयं मुड़कर हमें उठने–बैठने–लेटने में मदद देने की भी। संक्षेप में जीवन की कृतार्थता यह है कि वह दृढ़ हो, पर अड़ियल न हो।

(i) किस स्थिति में हम रामलीला के रावण की तरह हो सकते हैं ? 2

(ii) जीवन की कृतार्थता अड़ियल होने की अपेक्षा दृढ़ता में क्यों है ? 2

(iii) हमारे विचार लचीले क्यों होने चाहिए, स्पष्ट कीजिए। 2

अथवा

आदमी की जिंदगी अपने–आप में बहुत ही अकेली और नीरस होती है। आदमी–आदमी के रिश्ते––नाते बहुत दूर तक साथ नहीं देते। पर जब वह इनसे आगे बढ़कर एक व्यापक संबंध कायम करने की कोशिश करता है तो उसके साथ वन, पर्वत, नदी आदि सब चल पड़ते हैं। तब वह अकेला नहीं रह जाता। आज वह वनस्पतियों और पानी के रिश्ते को भूलकर अपने को भी अकेला बना रहा है और उनसे आपसी संबंधों का भी विच्छेद करता जा रहा है। गंगा, यमुना, गोदावरी, नर्मरा और कावेरी आज भी भारत में बह रही हैं। पर अब वे मोक्षदायनी नहीं रह गई हैं।

(i) लेखक आदमी की जिंदगी को अपने आप में नीरस और अकेली क्यों कह रहा है ? 2

(ii) आज का मनुष्य वनस्पति और पानी के रिश्ते को भूलकर अपने आप को अकेला कैसे बना रहा है ? 2

(iii) लेखक ऐसा क्यों कहता है कि भारत की नदियाँ अब मोक्षदायिनी नहीं रह गई हैं ? 2

5. **किन्हीं तीन प्रश्नों के उत्तर दीजिए :** 3+3+3=9

(i) 'यह देश एक है' पाठ के आधार पर सिद्ध कीजिए कि भारत में विविधता के भीतर ही एकता के गुण विद्यमान हैं।

(ii) कोकिल के भीतर तोते का रहना वर्तमान समाज की किस मानसिकता की ओर संकेत करता है ? 'चित्र' पाठ के आधार पर स्पष्ट कीजिए।

(iii) वन की संकल्पना को पेड़–पौधे और पशु स्वीकार क्यों नहीं कर पा रहे थे ? 'तत्सत' कहानी के आधार पर उत्तर दीजिए।

(iv) 'मेरे लिए भारतीय होने का अर्थ' पाठ में लेखक पुश्किन के पत्र को उद्धृत करके हमें क्या बताना चाहता है ?

6. **'विविधा' भाग –2 के आधार पर निम्नलिखित में से किन्हीं तीन प्रश्नों के उत्तर लगभग 25–30 शब्दों में दीजिए** 2+2+2=6

(क) राजर्षि पुरुषोत्तम दास टंडन के व्यक्तित्व की क्या विशेषताएं थी ? 'टंडन जी अडिग रहे' पाठ के आधार पर बताइए।

(ख) 'इंद्रियलिप्सु जीवन नहीं है।' 'मूँगा गूंगा' कहानी के आधार पर स्पष्ट कीजिए।

(ग) रवींद्रनाथ ठाकुर ने भगिनी निवेदिता की सेवा को 'दिल की सेवा' क्यों कहा था ?

(घ) लेखक के पिता के जीवन की कौन–सी घटनाएँ उनकी विद्रोही प्रवृत्ति पर प्रकाश डालती हैं ? 'एक पत्र' पाठ के आधार पर बताइए।

7. **निम्नलिखित प्रश्न का उत्तर लगभग 50–60 शब्दों में लिखिए :** **4**

''काम पूरा होने से पहले नहीं मरूंगा साहब''। 'माँ जानती है' पाठ में अरूमुगम के किन कार्यों से उसके इस कथन की पुष्टि होती है ?

अथवा

पंडित विष्णु दिगंबर पलुस्कर के चरित्र की किन–किन विशेषताओं ने आपको सर्वाधिक प्रभावित किया और क्यों ?

8. **'विराटा की पद्मिनी' के आधार पर किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 40–50 शब्दों में दीजिए :** **3+3=6**

(i) बुंदेलखंड का पंचनदा कौन–सा स्थान कहलाता है ? यह स्थान क्यों प्रसिद्ध है ? वहां कौन जाकर ठहरे थे ?

(ii) अलीमर्दान के सिंहगढ़ आने से कुंजरसिंह प्रसन्न क्यों नहीं था ?

(iii) देवीसिंह ने अंत में दांगी वीरों को किन शब्दों में श्रद्धांजलि दी ? विराटा की जागीर के लिए क्या निर्णय किया ?

9. **'विराटा की पद्मिनी' उपन्यास के आधार पर कुंजर सिंह की चारित्रिक विशेषताएं स्पष्ट कीजिए** **4**

अथवा

'विराटा की पद्मिनी' का उद्देश्य नई पीढ़ी को भारत के प्राचीन गौरव से परिचित कराना है–इस कथन का विवेचन कीजिए।

10. **रेखांकित पदों का व्याकरणिक परिचय दीजिए :** **3**

<u>शीत</u> ऋतु में <u>हिमालय का</u> क्षेत्र पूर्णतया बर्फ से ढक जाता है और वहां का जन–जीवन अस्त–व्यस्त <u>हो जाता है।</u>

11. **निर्देशानुसार वाच्य–परिवर्तन कीजिए।** **3**

(i) अध्यापक विद्यालय में शिक्षा देते हैं। (कर्मवाच्य में)

(ii) बाढ़ पीड़ितों की सहायता के लिए सरकार द्वारा करोड़ों रुपए खर्च किए जाते हैं। (कर्तृ वाच्य में)

(iii) मैं इस गर्मी में सो नहीं सकता। (भाव वाच्य में)

12. (क) **समस्त पदों का विग्रह करके समास का नाम भी लिखिए :** 2

हथोंहाथ, गजानन।

(ख) **समस्त पद बनाइए और समास का नाम भी लिखिए :** 2

गंगा और यमुना, हाथ से लिखित।

13. **निम्नलिखित अशुद्ध वाक्यों को शुद्ध करके लिखिए :** 3

(i) कृपया दो दिन का अवकाश प्रदान करने की कृपा करें।

(ii) शेर को सामने देखकर मेरे तो प्राण ही सूख गया।

(iii) मुझे केवल मात्र पांच रुपए चाहिए।

14. **अर्थ के आधार पर निम्नलिखित वाक्यों के भेद बताइए :** 2

(i) वे लोग कहां रहते हैं ?

(ii) आपकी यात्रा शुभ हो।

(iii) उसकी पत्नी बहुत बीमार थी।

(iv) अगर वे आ जाते तो मेरा काम बन जाता।

15. **निर्देशानुसार वाक्यों में परिवर्तन कीजिए :** 2

(क) लालाजी थैला उठाकर दुकान की ओर चले। (संयुक्त वाक्य में)

(ख) वर्षा होने पर मोर नाचने लगते हैं। (मिश्रित वाक्य में)

16. (क) **निम्नलिखित वाक्य का विश्लेषण कीजिए :** 2

(i) तेजस्वी चाणक्य ने वीर चंद्रगुप्त को मगध का सम्राट बना दिया।

(ii) पवनपुत्र हनुमान ने देखते ही देखते सोने की लंका जला दी।

(ख) **निम्नलिखित वाक्यों का संश्लेषण कीजिए :** 2

(i) होरी एक किसान था। वह बहुत गरीब था। वह बहुत परिश्रम करता था।

(ii) शीला मेरी बहन है। वह मुंबई से कल आएगी। हम दो दिन तक मौज–मस्ती करेंगे।

17. (क) **उपयुक्त लोकोक्तियों से रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए :** 2

(i) राम ने कहा कि मेरी आर्थिक दुर्दशा में तुम्हारी थोड़ी–सी सहायता मेरे लिए.......
....बन जाएगी।

(ii) मैं जल्दबाजी में पुरानी नौकरी से इस्तीफा दे आया और नई नौकरी मिली नहीं।
मेरी दशा तो ऐसी हो गई जैसे.. ।

(ख) **निम्नलिखित मुहावरों में से किन्हीं दो का वाक्यों में इस प्रकार प्रयोग कीजिए कि उनके अर्थ स्पष्ट हो जाएँ :** 2

(i) गाँठ बाँध लेना

(ii) सिर हथेली पर रखना

(iii) चार चाँद लगाना

18. **निम्नलिखित गद्यांश को पढ़कर नीचे दिए गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए।**

(क) मैं जिस समाज की कल्पना करता हूं, उसमें गृहस्थ सन्यासी और सन्यासी गृहस्थ होंगे अर्थात सन्यास और गृहस्थ के बीच वह दूरी नहीं रहेगी जो परंपरा से चलती आ रही है। सन्यासी उत्तम कोटि का मनुष्य होता है, क्योंकि उसमें संचय की वृत्ति नहीं होती, लोभ और स्वार्थ नहीं होता। यही गुण गृहस्थ में भी होना चाहिए। सन्यासी भी वही श्रेष्ठ है जो समाज के लिए कुछ काम करे। ज्ञान और कर्म को भिन्न करोगे तो समाज में विषमता उत्पन्न होगी ही। मुख में कविता और करघे पर हाथ, यह आदर्श मुझे पसंद था। इसी की शिक्षा मैं दूसरों को भी देता हूं और तुमने सुना है या नहीं कि नानक ने एक अमीर लड़के के हाथ से पानी पीना अस्वीकार कर दिया था। लोगों ने कहा, ''गुरुजी यह लड़का तो अत्यंत संभ्रांत वंश का है, इसके हाथ का पानी पीने में क्या दोष है ?'' नानक बोले, ''इसकी हथेली में मेहनत–मजदूरी के निशान नहीं हैं। जिसके हाथ में मेहनत के ठेले नहीं होते, उसके हाथ का पानी पीने में मैं दोष मानता हूँ।'' नानक ठीक थे। श्रेष्ठ समाज वह है, जिसके सदस्य जी खोलकर श्रम करते हैं और, तब भी जरूरत से अधिक धन पर अधिकार जमाने की उनकी इच्छा नहीं होती।

(i) 'गृहस्थ सन्यासी और सन्यासी गृहस्थ होंगे' से लेखक का क्या आशय है ? 1

(ii) सन्यासी उत्तम कोटि का मनुष्य क्यों माना गया है ? 1

(iii) समाज में विषमता कब उत्पन्न होती है ? 1

(iv) श्रेष्ठ समाज कौन–सा है ? 1

(v) 'विषमता' शब्द का विलोम लिखकर इसमें प्रयुक्त प्रत्यय अलग कीजिए। 1

(ख) **नीचे दिए गए काव्यांश को पढ़कर पूछे–गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए :**

खुब गए
दूधिया निगाहों में
फटी बिवाइयों वाले खुरदरे पैर
धंस गए
कुसुम कोमल मन में
गुट्ठल घट्ठों वाले कुलिश कठोर पैर
दे रहे थे गति
रबड़ विहीन ठूंठ पैडलों को
चला रहे थे

एक नहीं, दो नहीं, तीन–तीन चक्र
कर रहे थे मात्र त्रिविक्रम वामन के पुराने पैरों को
नाप रहे थे धरती का अनहद फासला
घंटों के हिसाब से ढोए जा रहे थे!

देर तक टकराए
उस दिन इन आंखों से वे पैर
भूल नहीं पाऊंगा फटी बिवाइयां
खुब गई दुधिया निगाहों में
धंस गई
कुसुम कोमल मन में।

(i) रिक्शा चालक के पैरों में बिवाइयां और गाँठों से भरे घट्ठे क्यों पड़ गए थे ? 1

(ii) कवि ने रिक्शा चालक के पैरों की तुलना किसके पैरों से की है ? 1

(iii) कवि ने अपने मन और दृष्टि के लिए किन उपमानों का प्रयोग किया है और क्यों ? 1

(iv) 'घंटों के हिसाब से ढोए जा रहे थे' से कवि किस कटु सत्य की ओर संकेत करता है ? 1

(v) कवि को क्यों लगता है कि वह रिक्शा चालक के 'बिवाई–पड़े पैरों' को भूल नहीं पाएगा ? 1

19. विद्यालय के वार्षिक उत्सव का वर्णन करते हुए पुरस्कार प्राप्ति की प्रसन्नता व्यक्त करते हुए राहुल की ओर से पिताजी को एक पत्र लिखिए। 5

अथवा

दैनिक समाचार–पत्र के संपादक को दिव्या की ओर से एक पत्र लिखिए, जिसमें कार्यालयों में बढ़ते भ्रष्टाचार की ओर सरकार का ध्यान आकर्षित कराया गया हो।

20. किसी एक विषय पर लगभग 250 शब्दों में निबंध लिखिए : 10

(क) इक्कीसवीं सदी का भारत

(ख) बढ़ती आबादी और सिमटते साधन

(ग) कर्म ही पूजा है।

(घ) संचार क्रांति और भारत

(ङ) मन के हारे हार है, मन के जीते जीत।

हिंदी (केंद्रिक)

कक्षा–12

प्रतिदर्श प्रश्नपत्र–II

अंक–योजना उत्तर–संकेत और मूल्य–बिंदु

प्र०सं०	अपेक्षित उत्तर–संकेत / मूल्य बिंदु	अंक–विवरण / योग

1. (केवल एक काव्यांश की सप्रसंग व्याख्या अपेक्षित)

अंक विभाजन–

(i)	कवि और कविता का नामोल्लेख	½+½ = 1
(ii)	प्रसंग (पूर्वापर संबंध निर्वाह)	1
(iii)	व्याख्या : प्रमुख भाव–बिंदुओं का स्पष्टीकरण अपेक्षित	2½
(iv)	अभिव्यक्ति–कौशल, भाषिक–कुशलता	½
		कुल अंक : 5

प्रसंग : प्रस्तुत काव्यांश सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' की कविता 'जागो फिर एक बार' से लिया गया है।

भारतीय वीरों को शत्रुओं के विरुद्ध, प्रोत्साहित करते हुए कहा गया है कि वीरों के अधिकार–हनन का कोई साहस नहीं कर सकता।

व्याख्या–बिंदु : हे भारतवासी! जो भेड़ के समान कायर होते हैं, वे अपने अधिकार छिनते देख विरोध नहीं करते, परिणामतः जीवन–पर्यंत आंसू बहाते हैं। डार्विन से पूर्व भारत में श्रीकृष्ण ने गीता में अन्याय के विरुद्ध शस्त्र उठाने की प्रेरणा दी थी क्योंकि समर्थ ही जीवित रहने का अधिकारी है।

विशेष : भाषा–तत्सम शब्द–प्रधान शब्दावली से युक्त, मुक्त छंद, ओज गुण, प्रतीकात्मकता का गुण।

अथवा

प्रसंग : प्रस्तुत पद 'संतवाणी' शीर्षक के अंतर्गत संकलित गुरु नानक द्वारा रचित है। ईश्वर को किसी विशेष स्थान पर खोजा नहीं जा सकता क्योंकि वह तो सर्व–व्यापक है।

व्याख्या–बिंदु : ईश्वर सर्व–व्यापक है, इसलिए उसे वन आदि में खोजने की आवश्यकता नहीं है। जिस प्रकार पुष्प में गंध और दर्पण में परछाई समाई है, उसी प्रकार मनुष्य के हृदय में वह परमात्मा समाया है। उसे हृदय में ही खोजना होगा। गुरु के ज्ञान के भीतर–बाहर (सर्वत्र) व्याप्त ईश्वर का अनुभव किया जा सकता है। अतः भ्रम दूर होने पर ही स्वयं को जाना जा सकता है।

विशेष : भाषा में आम बोलचाल के शब्द, उपमा, दृष्टांत अलंकार, भाषा में चित्रात्मकता का गुण है।

2. **किन्हीं दो काव्यांशों का काव्य–सौंदर्य स्पष्ट करना अपेक्षित** **3+3=6**

अंक–विभाजन :

(i) भाव–सौंदर्य	1½
(ii) शिल्प–सौंदर्य	1½
	कुल अंक : 3

(क) **भाव सौंदर्य :** शिव मंगल सिंह सुमन ने 'मिट्टी की महिमा' नामक कविता की इन पंक्तियों में मिट्टी को सर्वाधिक प्राचीन और ब्रह्मा, विष्णु तथा महेश की जन्मदात्री के रूप में चित्रित किया गया है।

शिल्प–सौंदर्य : भाषा सरल, सरस एवं प्रवाहपूर्ण खड़ी बोली है। मिट्टी पर मानवीय भावों का आरोपण है। मानवीकरण व अनुप्रास अलंकार का प्रयोग है।

(ख) **भाव–सौंदर्य :** केदारनाथ अग्रवाल ने 'वीरांगना' कविता में नारी को वीरांगना–रूप में चित्रित कर उसे शक्ति–स्वरूपा माना है। वह विषम परिस्थितियों में दृढ़ रहते हुए दूसरों के कल्याण–हेतु भिन्न–भिन्न रूपों में ढलती है।

शिल्प–सौंदर्य : नारी के कोमल एवं दृढ़ रूपों का सशक्त एवं नवीन ढंग से चित्रण किया गया है। कविता में प्रसाद गुण है। भाषा सहज एवं प्रवाहपूर्ण खड़ी बोली है। अनुप्रास एवं उपमा अलंकारों की छटा द्रष्टव्य है। कविता में सहज छंद–प्रवाह है। यह लघु कविता का एक सुंदर उदाहरण है।

(ग) **भाव–सौंदर्य :** जीवन के प्रति आशावादी दृष्टिकोण। सबके प्रतिप्रेम और सहानुभूति, समाज में एक व्यक्ति की भी व्यक्तिगत महत्ता।

शिल्प–सौंदर्य : आम बोलचाल के शब्दों से युक्त खड़ी बोली की भावमयी कविता है। विरोधाभास और मानवीकरण अलंकार की प्रधानता है।

3. **किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर अपेक्षित हैं** **2+2=4**

अंक–विभाजन :

(i) कथ्य	1½
(ii) भाषा–शुद्धता	½
	कुल अंक : 2

(क) वायु को किसान की उज्ज्वल गाथा इसलिए कहा गया है, क्योंकि श्रम का यश वायु की तरह सब जगह व्याप्त है। सूर्य को किसान का रथ इसलिए कहा गया है, क्योंकि सूरज की ऊष्मा के बल पर फसलें तैयार होती हैं।

(ख) भारतीय नारी प्राचीन काल से ही आत्मविश्वासी, सच्ची प्रेमिका, पतिव्रता, विपरीत परिस्थितियों में अडिग रहने वाली, स्फूर्तिमयी, पति के सुख–दुख की साथिन, आशा एवं विश्वास से भारी है।

(ग) कवि को क्लर्क के रूप में निरंतर जीवन की जटिलताओं को झेलना पड़ता है। आर्थिक तंगी को सहना पड़ता है। प्रतिदिन जीवन में सर्वत्र संघर्ष करना पड़ता है।

4. (i) यदि हम परिस्थिति के अनुसार लचीले या दृढ़ नहीं होते तो हम रामलीला के रावण की भांति हो जाएंगे जो न हिलता है न झुकता है। 2

(ii) जीवन की कृतार्थता अड़ियल होने की अपेक्षा दृढ़ता में हैं क्योंकि हमें अपने आदर्शों का पालन दृढ़ता से करना चाहिए। बिना उचित–अनुचित का विचार किए अड़ियल बने रहने से जीवन कृतार्थ नहीं होता। 2

(iii) हमारे विचारों में लचीलापन है तो हम सहज ही परिस्थितियों के साथ सामंजस्य स्थापित कर सकते हैं। हमारे आदर्श स्थिर हों और विचारों में लचीलापन हो तो हम जीवन के मोर्चे पर डटे रह सकते हैं; जैसे बांस का हरा–भरा पेड़ हवा के साथ हिलता है, झुकता है, फिर सीधा खड़ा हो जाता है।

अथवा

(i) मनुष्य का प्रकृति से दृढ़ नाता है। वन, पर्वत, नदी के बिना उसका जीवन अकेला और नीरस हो जाता है। 2

(ii) आज मनुष्य वनस्पति और जल से अपना नाता तोड़ रहा है जिसके कारण उसका जीवन नीरस और अकेला होता जा रहा है। वनस्पति और पानी का रिश्ता अटूट और अनंत है, मनुष्य का नाता इनसे अटूट है। आज मनुष्य को अपने स्वार्थ और व्यस्तता त्यागकर प्रकृति की हरियाली व जल की पवित्रता को बनाए रखना चाहिए। 2

(iii) आज नगर व कारखानों की गंदगी से भी नदियों का जल प्रदूषित हो गया है। जो नदियां जीवन व संस्कृति का स्रोत हैं व आज बढ़ते जल–प्रदूषण के कारण अपना महत्व खो रही हैं। 2

5. **किन्हीं तीन प्रश्नों के उत्तर अपेक्षित** **3+3+3=9**

अंक विभाजन :

(i) कथ्य	2
(ii) प्रस्तुति	1
	कुल अंक : 3

(क) भाषा, धर्म, खानपान व वेशभूषा आदि की दृष्टि से हम में विविधता भले ही हो, पर साहित्यिक, दार्शनिक एवं सांस्कृतिक दृष्टि से हम में एकता की भावना विद्यमान है। सभी भाषाओं व धर्मों के साहित्य में भावनागत साम्य मिलता है। सभी क्षेत्रों में सत्य, अहिंसा, त्याग, परोपकार एवं न्याय आदि मानवीय भावनाओं के प्रति सम्मान की भावना है।

(ख) कोकिल के भीतर तोते का रहना इस मानसिकता की ओर संकेत करता है कि स्वतंत्र रूप से बोलने वाले व्यक्ति अपने भाषा और भाव अपने मालिक के संकेत पर बदल रहे हैं। वे वही दोहराते हैं जो उन्हें उनके आका कहते हैं। बाहर से कोकिल अर्थात स्वतंत्र होने का ढोंग करते हैं पर अंदर की मानसिकता सुख–भोग और पराधीनता की है।

(ग) पेड़–पौधे और पशु सभी अपना पृथक अस्तित्व समझते थे। वे सबके समग्र रूप वन से अनजान थे। अज्ञान के कारण अपनी–अपनी ढपली अपना–अपना राग अलापते थे। उन्हें यह ज्ञान ही नहीं था कि वे सब मिलकर वन हैं। वे सब वन के अंश हैं, इसे वे नहीं मानते थे, नहीं जानते थे।

(घ) देश में व्याप्त असंतुलन के बावजूद जिस प्रकार पुश्किन अपना देश किसी अन्य देश से बदलना नहीं चाहता उसी प्रकार अनेक समस्याओं, कठिनाइयों से जूझते हुए भी लेखक के मन में इसके प्रति गहरा प्रेम है। देश वर्तमान में ही नहीं होता। उसकी जड़ अतीत की गहराइयों तक फैली होती है। हर भारतीय की सच्ची पहचान उन लोगों से है जो अतीत में थे, जिनकी मिट्टी इस धरती में दबी है।

6. **किन्हीं तीन प्रश्नों के उत्तर अपेक्षित** **2+2+2=6**

अंक विभाजन :

(i)	कथ्य	1½
(ii)	भाषा–शुद्धता	½
		कुल अंक : 2

(क) राजर्षि पुरुषोत्तम दास टंडन के व्यक्तित्व की विशेषताएं : भारतीय स्वतंत्रता सेनानी, हिंदी को राजभाषा के रूप में सम्मान दिलाने वाले, निष्कलंक छवि, कांग्रेस के समर्पित नेता, निर्भीक, सिद्धांतों के प्रति निष्ठा आदि।

(ख) मूंगा गूंगा बात–बात पर अपमानित होता था। मांगकर खाना उसे उचित नहीं लगता था। इंद्रिय सुख तक जीवन को सीमित नहीं रखना चाहिए। इंद्रिय सुख से ऊपर उठकर जीवन को उत्साहपूर्वक जीने में जीवन का वास्तविक आनंद है।

(ग) वे सच्चे अर्थों में दिल से सेवा करने वाली समाज–सेवी थीं। वे तन और धन से नहीं, सच्चे दिल से, निःस्वार्थ भावना से अकाल, बाढ़ व प्लेग–पीड़ितों की सेवका थीं।

(घ) उन्होंने पिता के द्वारा लगान–वसूली और लेन–देन के कार्य का विरोध किया। वे घर छोड़कर बरेली चले गए। वे लेखक की माता के विरोध पर भी हर तरह की किताबें उन्हें पढ़ने को देते। घर में संपत्ति के बंटवारे पर भाइयों से खूब झगड़ा हुआ।

7. अरुमुगम जिस काम को भी हाथ में लेता था, उसे पूरा करता था, उसने अपने कच्चे घर को पक्के घर में बदला, भांजी की शादी करने का वचन पूरा किया तथा शत्रु के जेट को गिराए बिना उसने दम नहीं तोड़ा। (उत्तर 50–60 शब्दों में अपेक्षित)

अथवा

पंडित विष्णु दिगंबर पलुस्कर के स्वाभिमानी चरित्र, अनुशासन–प्रियता, संगीत के प्रति लगाव और लालचहीन स्वभाव ने हमें प्रभावित किया। गुणों पर पर्याप्त प्रकाश डाला गया हो। 4

8. **किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर अपेक्षित।** **3+3=6**

अंक विभाजन :

(i) कथ्य	2
(ii) प्रस्तुति–अभिव्यक्ति	1
	कुल अंक : 3

(क) पंचनदा बुंदेलखंड का एक विशेष स्थान है जहां यमुना, सिंधु, पाहुज और कुमारी–ये नदियां एक स्थान पर मिलती हैं। बालू; पानी और हरियाली का यह वैभव विचित्र मिश्रण की रचना करता है। इस संगम के करीब एक गढ़ी में राजा नायक सिंह दल के साथ आकर ठहरे थे।

(ख) सिंहगढ़ में कुंजर सिंह छोटी रानी से बातचीत के दौरान स्पष्ट कहता है कि उन्हें अलीमर्दान को सहायता के लिए नहीं बुलाना चाहिए था। रानी दलीप नगर की प्राप्ति के लिए अलीमर्दान का सहयोग आवश्यक मानती हैं और इस उद्देश्य से ही उसने अलीमर्दान को राखी भिजवाई थी। कुंजर सिंह जानता था कि अलीमर्दान की इस सहायता के पीछे दूसरा ही मंतव्य है, क्योंकि वह तो पालर की देवी को पाने और मंदिर को नष्ट करने आया है।

(ग) देवी सिंह ने दांगी वीरों के शवों को सिर नवाकर प्रणाम किया। सभी सैनिकों ने भी नत मस्तक होकर नमस्कार किया। देवी सिंह ने रुद्ध गले से कहा ''अपनी बान पर अड़े थे; अपनी बान पर, निश्चय के साथ में। इन्हें मरने में जैसा सुख मिला होगा, हमें कदाचित जीवन में भी न मिलेगा। बहुत समारोह के साथ इनकी दाह–क्रिया की जानी चाहिए।'' विराटा की जागीर के लिए उसने निर्णय लिया कि विराटा का गांव किसी अन्य को जागीर में नहीं दिया जाएगा। दांगियों में जो बचेगा उसी के हाथ में यह गांव रहेगा।

9. कुंजरसिंह की चार चारित्रिक विशेषताएं अपेक्षित (उपन्यास की घटनाओं के आलोक में विशेषताओं का स्पष्टीकरण अपेक्षित)

अंक विभाजन :

(i) कथ्य	3
(ii) भाषा–शुद्धता, अभिव्यक्ति	1
	कुल अंक : 4

कुंजर सिंह : उपन्यास का प्रमुख पुरुष पात्र, निस्वार्थ भाव से राजा के प्रति समर्पित, अपने अधिकारों के लिए लड़ने वाला, वीरता एवं साहस की प्रतिमूर्ति, कर्तव्यनिष्ठ एवं वीर योद्धा, तोप–संचालन में निपुण, आदर्श प्रेमी, वचन पर अडिग रहने वाला और धर्म–रक्षक आदि।

अथवा

कथन के समर्थन में किन्हीं तीन बिंदुओं का उल्लेख अपेक्षित।

10. **शीत :** गुणवाचक विशेषण, विशेष्य है 'ऋतु' (लिंग, वचन और कारक विशेष्य के अनुसार) 1

हिमालय का : व्यक्तिवाचक संज्ञा, पु., एकवचन, संबंधकारक, संबंधी शब्द 'क्षेत्र' 1

हो जाता है : अकर्मक क्रिया, पु., एकवचन, निश्चयार्थ, वर्तमान, कर्तृवाच्य, कर्तरि प्रयोग। 1

11. (क) अध्यापकों द्वारा विद्यालय में शिक्षा दी जाती है। 1

(ख) बाढ़ पीड़ितों की सहायता के लिए सरकार ने करोड़ों रुपए खर्च किए। 1

(ग) मुझसे इस गर्मी में सोया नहीं जा सकता। 1

12. (क) हाथ ही हाथ में – अव्ययी भाव समास 1
गज के समान आनन है जिसका (गणेश) – बहुब्रीहि समास 1

(ख) गंगा–यमुना – द्वंद्व समास 1
हस्तलिखित – तत्पुरुष समास 1

13. (क) कृपया दो दिन का अवकाश प्रदान करें। 1

(ख) शेर को सामने देखकर तो मेरे प्राण ही सूख गए। 1

(ग) मुझे मात्र पांच रूपए चाहिए। 1

14. (क) प्रश्नवाचक वाक्य ½

(ख) इच्छावाचक वाक्य ½

(ग) विधानवाचक वाक्य ½

(घ) संकेतवाचक वाक्य ½

15. (क) लालाजी ने थैला उठाया और दुकान की ओर चले गए। 1

(ख) जब वर्षा होती है, मोर नाचने लगते हैं। 1

16. (क) (i) 1

कर्ता	–	चाणक्य ने
कर्ता विस्तार	–	तेजस्वी
कर्म	–	चंद्रगुप्त को
कर्म विस्तार	–	वीर
क्रिया पद	–	बना दिया
पूरक	–	मगध का सम्राट

(ii) 1

कर्ता	–	हनुमान ने
कर्ता विस्तार	–	पवन पुत्र
कर्म	–	लंका
कर्म का विस्तार	–	सोने की
क्रिया पद	–	जला दी
क्रिया विशेषण	–	देखते ही देखते

(ख) (i) होरी एक गरीब और परिश्रमी किसान था। 1

(ii) मेरी बहन शीला के कल मुंबई से आने पर हम दो दिन तक मौज–मस्ती करेंगे। 1

17.	(क)	(i)	डूबते को तिनके का सहारा	2
		(ii)	धोबी का कुत्ता, घर का न घाट का	2
				कुल अंक : 4
	(ख)		उपयुक्त प्रयोग पर पूरे अंक दें।	1+1=2
18.	(क)	(i)	गृहस्थ सन्यासी और सन्यासी गृहस्थी से आशय है—गृहस्थ में रहकर सन्यासी जैसा सादा जीवन जीना। दोनों में संतुलन बनाना ही सन्यासी गृहस्थ जीवन है।	1
		(ii)	क्योंकि उसमें संचय की वृत्ति नहीं होती। वह लोभ और स्वार्थ से परे रहता है तथा समाज—सेवा का कार्य करता है।	1
		(iii)	ज्ञान और कर्म में भिन्नता करने से या दोनों में समन्वय न होने से समाज में, विषमता उत्पन्न होती है।	1
		(iv)	जिसके सदस्य ज्ञान और कर्म को बराबर महत्व देते हैं, वे जी खोलकर परिश्रम करते हैं और जरूरत से अधिक धन पर अधिकार नहीं जमाते।	1
		(v)	समता, प्रत्यय— 'ता'	1
	(ख)	(i)	रिक्शाचालक प्रतिदिन घंटों तक रबड़—विहीन सख्त पैडलों को पैरों से जोर लगाकर चलाता था।	1
		(ii)	रिक्शाचालक के पैरों की तुलना वामन अवतार धारण करने वाले भगवान विष्णु के तीन लोक नापने वाले पैरों से की गई है।	1
		(iii)	कवि ने अपने मन और दृष्टि के लिए फूल और दूध उपमानों का प्रयोग किया, क्योंकि मन फूल—सा कोमल और भावुक है, दृष्टि दूध—सी धवल एवं संवेदना से युक्त है, जिससे वे खुरदरे पैरों की चुभन महसूस कर सकते हैं।	1
		(iv)	रिक्शाचालक घंटों के हिसाब से रिक्शे के मालिक को किराया देते हैं। अपनी मेहनत की कमाई का एक बड़ा हिस्सा किराए के रूप में देते हैं।	1
		(v)	रिक्शाचालक के जीवन—संघर्ष को कवि ने हृदय की गहराई से महसूस किया है; इसलिए यह गहरी संवेदना रिक्शाचालक के बिवाई—पड़े पैरों की स्मृति बनाए रखेगी।1	
19.	पत्र लेखन		औपचारिकताएं	2
			विषय—सामग्री / प्रतिपादन और अभिव्यक्ति	3
				कुल अंक : 5
20.	निबंध लेखन		प्रस्तावना	1
			विषय—सामग्री और प्रस्तुति	6
			उपसंहार	1
			भाषा—शुद्धता / अभिव्यक्ति	2
				कुल अंक : 10

हिंदी (ऐच्छिक)

कक्षा–12

प्रतिदर्श प्रश्नपत्र–I

समय : 3 घंटे　　　　　　　　　　　　　　　　　　　　　　　　　　　　　पूर्णांक : 100

1. निम्नलिखित गद्यांशों में से किसी एक की सप्रसंग व्याख्या कीजिए : **10**

(क) वैर क्रोध का अचार या मुरब्बा है। जिससे हमें दुःख पहुंचा है, उस पर यदि हमने क्रोध किया और यह क्रोध हमारे हृदय में बहुत दिनों तक टिका रहा तो वह वैर कहलाता है। इस स्थायी रूप में टिक जाने के कारण क्रोध का वेग और उग्रता तो धीमी पड़ जाती है, पर लक्ष्य को पीड़ित करने की प्रेरणा बराबर बहुत काल तक हुआ करती है। क्रोध अपना बचाव करते हुए शत्रु को पीड़ित करने की युक्ति आदि सोचने का समय प्रायः नहीं देता।

(ख) इतना सच जान पड़ता है कि भीष्म के कर्तव्य–अकर्तव्य के निर्णय में कहीं कोई कमजोरी थी। वह उचित अवसर पर उचित निर्णय नहीं ले पाते थे। यद्यपि वह जानते बहुत थे, तथापित कुछ निर्णय नहीं ले पाते थे। उन्हें अवतार न मानना ठीक ही हुआ। आजकाल भी ऐसे विद्वान मिल जाएंगे, जो जानते बहुत हैं, करते कुछ भी नहीं। करने वाला इतिहास–निर्माता होता है, सिर्फ सोचने वाला इतिहास के भयंकर रथ–चक्र के नीचे पिस जाता है। इतिहास का रथ वह हांकता है जो सोचता है और सोचे को करता भी है।

2. निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्हीं तीन के उत्तर लगभग 40–50 शब्दों में दीजिए : **4+4+4=12**

(क) 'अथातो घुमक्कड़ जिज्ञासा' पाठ के लेखक युवाओं को घुमक्कड़–धर्म ग्रहण करने का परामर्श क्यों देते हैं ?

(ख) 'व्यक्ति की एक झलक' पाठ में लेखक ने प्रसाद के व्यक्तित्व के बाह्य और भीतरी स्वरूप की किन विशेषताओं का उल्लेख किया है ?

(ग) मिशनरी भाव की निंदा और ईर्ष्या–द्वेष से प्रेरित निंदा में क्या अंतर है ? 'निंदा रस' पाठ के आधार पर स्पष्ट कीजिए।

(घ) 'मेरी जीवन यात्राा: दो चित्र' पाठ के आधार पर टिप्पणी कीजिए कि लेखक के जीवन के ये दो चित्रा बदलती सामाजिक मानसिकता के परिचायक हैं।

3. **निम्नलिखित प्रश्नों में से किसी एक का उत्तर 40–50 शब्दों में दीजिए :** **3**

(क) पर्यावरण या विकास और अस्तित्व या विनाश निबंध के माध्यम से लेखक ने आज के राष्ट्रीय और समाजिक जीवन के संदर्भ में कौन–कौन सी समस्याएं उठाई हैं ?

(ख) ''जिसने कभी तलवार नहीं चलाई, वह इरादा करने पर भी तलवार नहीं चला सकता।'' 'मंत्रा' कहानी के आधार पर इस कथन की समीक्षा कीजिए।

4. **निम्नलिखित काव्यांशों में से किसी एक की सप्रसंग व्याख्या कीजिए और उसके काव्य सौंदर्य पर भी प्रकाश डालिए।** **5+5=10**

मोहि मूढ़ मन बहुत बिगोयो।
याके लिए सुनहु करूनामय मैं जग जनमि–जनमि दुख रोयो।।
सीतल मधुर पीयूष सहज सुख निकटहिं रहत, दूर जनु खोयो।।
बहु भांतिन स्रम करत मोह बस बृथहिं मंदमति बारि बिलोयो।।
करम–कीच जिय, जानि, सानि चित, चाहत कुटिल मलहिमल धोयो।
तृषावंत सुरसरि बिहाय सठ, फिरि–फिरि बिकल अकास निचोयो।।
तुलसीदास प्रभु कृपा करहु अब, मैं निज दोष कछू नहिं गोयो।
डासत ही गई बीति निसा सब, कबहुँ न नाथ नींद भरि सोयो।

अथवा

भारत नहीं स्थान का वाचक गुण–विशेष नर का है,
एक देश का नहीं शील यह भू–मंडल पर का है।
जहाँ कहीं एकता अखंडित जहां प्रेम का स्वर है,
देश–देश में वहाँ खड़ा भारत जीवित भास्वर है।
निखिल विश्व की जन्मभूमि वंदन को नमन करूँ मैं।
किसको नमन करूँ मैं भारत! किसको नमन करूँ मैं ?

5. **निम्नलिखित में से किन्हीं तीन प्रश्नों के उत्तर दीजिए :** **3+3+3=9**

(i) 'ओ मेरे मन' कविता में 'कनात', 'बिस्तर' और 'टेरियर कुत्ते' प्रतीक कैसे व्यक्तियों के लिए प्रयुक्त किए गए हैं ?

(ii) ''लैंप पोस्ट तो मैं भी जला सकता हूँ'' 'पहचान' कविता के इस कथन के संदर्भ में बुद्धिजीवी वर्ग की भूमिका स्पष्ट कीजिए।

(iii) 'अनुखन माधव–माधव सुमिरइते, सुंदरि भेलि मधाई'–कथन का सौंदर्य स्पष्ट कीजिए।

(iv) ''यह महा दंभ का दानव
पीकर अनंग का आसव
कर चुका महा भीषण रव
सुख दे प्राणी को मानव,

तज विजय–पराजय का कुढंग।''
उपर्युक्त पंक्तियों का भाव–सौंदर्य स्पष्ट कीजिए।

6. तुलसीदास अथवा रामधारी सिंह 'दिनकर' के जीवन, रचनाओं और काव्यगत विशेषताओं पर प्रकाश डालिए। 6

7. 'रंगभूमि' उपन्यास के कथानक की प्रमुख विशेषताओं पर प्रकाश डालिए। 5

अथवा

''रंगभूमि जन–जागरण का उपन्यास है''–इस कथन से आप कहाँ तक सहमत हैं ? तर्क–सम्मत उत्तर दीजिए।

8. ''सूरदास गांधीवादी विचारों के वाहक, मानवीय गुण–दोषों से युक्त पुरुष हैं।'' इस कथन के परिप्रेक्ष्य में सूरदास का चरित्र चित्रण कीजिए। 5

अथवा

''प्रभु सेवक आत्मसेवी से ही जन–सेवी बनने वाला विकासशील पात्र है''–इस कथन के आलोक में प्रभु सेवक के चरित्र पर प्रकाश डालिए।

9. 'रंगभूमि भारतीय स्वतंत्रता–संग्राम की महागाथा है।'–इस उक्ति के आधार पर 'रंगभूमि' उपन्यास की देशकाल और वातावरण–योजना पर प्रकाश डालिए। 5

अथवा

''भाषा–शैली की दृष्टि से 'रंगभूमि' एक उत्कृष्ट औपन्यासिक कृति है।''–इस कथन का युक्ति युक्त विवेचन कीजिए।

10. ''रीतिकालीन कविता का प्रधान स्वर श्रृंगारपरक है।''–इस कथन की पुष्टि करते हुए रीति–कालीन साहित्य की तीन प्रमुख प्रवृत्तियों पर प्रकाश डालिए। 4

अथवा

संत काव्य की किन्हीं तीन प्रवृत्तियों को स्पष्ट करते हुए इस काल के दो प्रमुख कवियों के नाम भी लिखिए।

11. छायावाद को ''स्थूल के प्रति सूक्ष्म का विद्रोह'' क्यों कहा जाता है ? छायावादी काव्य की चार प्रमुख विशेषताओं को भी स्पष्ट कीजिए। 5

अथवा

प्रगतिवादी काव्य की चार प्रमुख विशेषताओं को स्पष्ट करते हुए इस काल के दो कवियों का नामोल्लेख कीजिए।

12. प्रेमचंद–युगीन हिंदी–उपन्यास साहित्य पर प्रकाश डालिए। 4

अथवा

प्रसाद युगीन हिंदी–नाटक साहित्य का संक्षिप्त परिचय दीजिए।

13. **निम्नलिखित में से किसी एक विषय पर लगभग 300 शब्दों में निबंध लिखिए :** 12

(क) विश्व में बढ़ता आतंकवाद

(ख) कंप्यूटर–आज की आवश्यकता

(ग) सबसे न्यारा देश हमारा

(घ) नर हो न निराश करो मन को

(ङ) राष्ट्र–निर्माण में साहित्य का योगदान।

14. **निम्नलिखित गद्यांश को पढ़कर नीचे दिए गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए :**

आवश्यकतानुरूप प्रत्येक को कार्य करना पड़ता है। कर्म से कोई मुक्त नहीं है। एक अत्यंत उच्चस्तरीय आध्यात्मिक पुरुष अथवा उसके विपरीत वैचारिक क्षमता से हीन व्यक्ति ही बिना कर्म के रह सकता है। इन दोनों श्रेणियों के मध्यवर्ती लोगों को कार्य करना पड़ता है। गीता कहती है–यदि तुम स्वेच्छा से कार्य नहीं करोगे तो प्रकृति तुम से बलात् कर्म कराएगी और सही भावना से अनुष्ठित कर्म धार्मिक हो जाता है। इस दृष्टि से जो राजनीति के माध्यम से मानवता की सेवा करना चाहते हैं उन्हें उपेक्षित नहीं किया जा सकता। यदि वे उचित भावना से कार्य करें तो वे अपने कार्यों को आध्यात्मिक स्तर तक उठा सकते हैं। यह समय की पुकार है। जो राजनीति में प्रवेश पाना चाहते हैं, वे यह कार्य एक आध्यात्मिक दृष्टिकोण लेकर, परोपकारिता का उच्च भाव लेकर करें और दिन–प्रतिदिन आत्मविश्लेषण, अंतर्दृष्टि, सतर्कता और सावधानी के भाव लेकर अपने आप का परीक्षण करें, जिससे वे सन्मार्ग से च्युत न होने पाएँ।

(i) कर्म से मुक्ति संभव क्यों नहीं है ? 1

(ii) कर्म आध्यात्मिक साधना कैसे बन सकता है ? 1

(iii) सही भावना से कर्म क्यों करना चाहिए ? 1

(iv) राजनीति में प्रवेश करने के इच्छुक व्यक्तियों को अपने कर्म किस प्रकार करने चाहिए। 1

(v) उपर्युक्त गद्यांश के लिए एक उपयुक्त शीर्षक दीजिए। 1

15. **निम्नलिखित काव्यांश को पढ़कर नीचे दिए गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए :**

एक दिन सहसा

सूरज निकला

और क्षितिज पर नहीं,

नगर के चौक

धूप बरसी

पर अंतरिक्ष से नहीं

फटी मिट्टी से।

छायाएं मानव जन की
दिशाहीन
सब ओर पड़ीं–वह सूरज
नहीं उगा थ्शा पूरब में, वह
बरसा सहसा
बीचो–बीच नगर के
काल–सूर्य के रथ के
पहियों के ज्यों अरे टूटकर
बिखर गए हों
दसों दिशा में
कुछ क्षण का वह उदय–अस्त।
केवल एक प्रज्वलित क्षण की
दृश्य सोख लेने वाली दोपहरी
फिर ?
छायाएँ मानव–जन की
नहीं मिटी लंबी हो–होकर
मानव ही सब भाप हो गए।
छायाएं तो अभी लिखी हैं।
झुलसे हुए पत्थरों पर
उजड़ी सड़कों की गच पर।

(i) क्षितिज से न उगकर नगर के बीचों–बीच बरसने वाला 'वह सूरज' क्या था ? 1

(ii) वह दुर्घटना कब कहाँ, घटी थी ? 1

(iii) उसे 'कुछ क्षण का उदय–अस्त' क्यों कहा गया है ? 1

(iv) 'मानव ही, सब भाप हो गए' कथन का क्या आशय है ? 1

(v) इस घटना के प्रमाण आज किस रूप में प्राप्त होते हैं ? 1

हिंदी (ऐच्छिक)

कक्षा–12

प्रतिदर्श प्रश्नपत्र–I

अंक–योजना उत्तर–संकेत और मूल्य–बिंदु

प्र०सं०	अपेक्षित उत्तर–संकेत/मूल्य बिंदु	अंक–विवरण/योग

1. (केवल एक गद्यांश की सप्रसंग व्याख्या अपेक्षित) 10

अंक विभाजन–

(i)	लेखक तथा पाठ का नामोल्लेख	½+½ = 1
(ii)	प्रसंग (पूर्वापर संबंध निर्वाह)	1
(iii)	व्याख्या (प्रमुख बिंदुओं का स्पष्टीकरण)	5
(iv)	भाषा–शैली पर टिप्पणी	3
		कुल अंक : 10

(i) **प्रसंग :** प्रस्तुत गद्यांश आचार्य रामचंद्र शुक्ल द्वारा रचित 'क्रोध' नामक निबंध से अवतरित है। इस गद्यांश में क्रोध और बैर मनोभावों के स्वरूप को बताते हुए दोनों के अंतर को स्पष्ट किया गया है।

व्याख्या–बिंदु : मन में बहुत दिनों तक रहने पर क्रोध बैर में बदल जाता है। क्रोध का स्थायी और परिपक्व रूप ही बैर है। समय के अंतराल के साथ क्रोध की गति मंद हो जाती है। क्रोध में शत्रु से बचाव का उपाव नहीं सूझता।

विशेष : विश्लेषणात्मक, विचारात्मक और सूत्रात्मक शैली। तत्सम बहुल, किंतु सहज एवं प्रवाह–पूर्ण भाषा का प्रयोग।

(ii) **प्रसंग :** प्रस्तुत पंक्तियां आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी–कृत 'भीष्म को क्षमा नहीं किया गया' नामक निबंध से ली गई हैं। भीष्म की चारित्रिक दुर्बलता का वर्ण करते हुए कहा गया है कि केवल चिंतन करने की अपेक्षा कर्म करने वाला ही इतिहास में अमर होता है।

व्याख्या–बिंदु : भीष में समय पर निर्णय ले पाने की क्षमता न थी। ज्ञान का व्यावहारिक पक्ष अधिक महत्वपूर्ण है, विचार और कर्म का संबंध रखने वाला व्यक्ति ही इतिहास रचता है।

विशेष : विचारात्मक शैली, सूक्तिमयता, तत्सम प्रधान साहित्यिक भाषा का प्रयोग।

2. **किन्हीं तीन प्रश्नों के उत्तर लगभग 40–50 शब्दों में अपेक्षित है :** **4+4+4=12**

अंक–विभाजन :

(i)	कथ्य	3
(ii)	भाषा–शुद्धता	1
		कुल अंक : 4

(i) युवावस्था ही घूमने के लिए उपयुक्त है, घुमक्कड़ी से ज्ञान में वृद्धि होती है, संघर्ष करने की क्षमता बढ़ती है, व्यक्तित्व में निखार आता है और नए–नए अनुभव प्राप्त होते हैं।

(ii) प्रसाद का संपूर्ण व्यक्तित्व दिव्य एवं मोहक था। मृदुल मुस्कान से युक्त, धैर्यपूर्वक बातें करना, सच्चे मित्र, मस्तमौला और व्यवहार कुशल–उनका आंतरिक स्वरूप–आनंदवादी, नाम व यश की आकांक्षा से परे, सभी समीक्षाओं पर तटस्थ बने रहना आदि।

(iii) मिशनरी भाव की निंदा बैर और द्वेष–रहित, भेदभाव–रहित, निर्लिप्त तथा पवित्रा भाव से, बिना किसी का अहित चाहे, सिर्फ आनंद प्राप्ति के लिए होती है। यह निंदकों के लिए टॉनिक होती है। ईर्ष्या–द्वेष से प्रेरित निंदाहीनता और कमजोरी छिपाने के लिए तथा अहं की तुष्टि के लिए होती है। निंदक ईर्ष्या की आग में जलता रहता है और उसमें दूसरों के अहित का भाव छिपा होता है।

(iv) पहला चित्र लेखक के बचपन का है, जिसमें रूढ़िवादी सामंती मानसिकता के कारण लोग यहस्वीकार नहीं कर पाते कि एक दलित बालक भी पढ़ाई का अधिकारी है। दूसरा चित्र उनकी किषोर अवस्था का है, जब वे जबलपुर प्रषिक्षण–संस्थान में अध्ययन कर रहे थे। वहां उन्हें सभी जाति और वर्ग के लोगों से सहयोग और सम्मान मिला।

3. किन्ही दो प्रष्नों के उत्तर लगभीग 40–50 षब्दों में अपक्षित है। तीन बिंदुओं में प्रष्न का उत्तर समाहित हो। 3

(i) **समस्याएँ** : पर्यावरण–प्रदूषण में वृद्धि की समस्या, प्राकुतिक संसाधनों की कमी, जैविक विविधता का ह्रास, गरीब और अमीर के बीच की खाई, लोगों के उजड़ने की समस्या, स्वास्थ्य की समस्या आदि।

(ii) **भगत का स्वभाव** : दयालु एवं परोपकारी था। उनके स्वभाव में था निष्काम भाव से लोक–कल्याण करना, किसी का अहित न करना। डा. चड्ढ़ा के प्रति क्रोध एवं प्रतिकार की भावना के बावजूद वह उसके पुत्र की प्राण–रक्षा के लिए पहुंच जाते हैं।

4. एक काव्यांशो की सप्रसंग व्याख्या अपेक्षित है : 10

अंक विभाजन

(i)	कवि, कविता का नाम	½ + ½
(ii)	प्रसंग (पूर्वापर संबंध–निर्वाह)	1
(iii)	व्याख्या (प्रमुख भाव–बिंदुओं का स्पष्टीकरण)	3
(iv)	काव्य सौंदर्य	5

कुल अंक : 10

प्रसंग : महाकवि तुलसीदास द्वारा रचित प्रस्तुत पद में संसार में आसक्ति के कारण भक्ति से विरक्ति का वर्णन करते हुए कवि द्वारा अपने पश्चयाताप–बोध का प्रभु के समक्ष निवेदन किया गया है।

व्याख्या–बिंदु : मूर्ख मन द्वारा भटकाए जाने के कारण ही जीवात्मा जन्म–मरण का दुःख भोग रही है तथा मन के कारण ही अमृत के समान शीतल, मधुर भक्ति का आनंद पाने से वह वंचित है। सुख–प्राप्ति–हेतु मोहवश किया गया परिश्रम पानी को मथकर घी निकालने जैसा व्यर्थ है। जीवन–भर सुखों को प्राप्त करने का प्रयत्न ऐसा है, जैसे बिस्तर बिछाते–बिछाते रात बीत जाए और सुख की नींद प्राप्त न हो।

काव्य सौंदर्य : श्शुद्ध साहित्यिक ब्रज भाषा का प्रयोग। अलंकार–अनुप्रास, पुनरूक्ति प्रकाश, दृष्टांत, समासोक्ति आदि पद छंद एवं रस–'शांत' आदि पर आधारित विस्तृत टिप्पणी अपोक्षित।

अथवा

प्रसंग : कविकर रामधारी सिंह 'दिनकर' की कविता 'किसको नमन करूं मैं' की इन पंक्तियों में प्रेम और सदाचार की शिक्षा देने के कारण भारत को संपूर्ण विश्व के लिए वंदनीय माना गया है।

व्याख्या–बिंदु : भारत को किसी भौगोलिक सीमा में नहीं बांधा जा सकता। वह तो एक विशेष गुण और भावना कानाम है। भारत का शील व सदाचार विश्व के लिए अनुकरणीय रहा है। भारत ने विश्व को एकता, अखंडता और प्रेम का संदेश दिया है, वह सबके के लिए वंदनीय है।

विशेष : भारत के जगद्गुरु गौरव का वण्रन किया गया है। भाषा तत्सम शब्दावलीयुक्त खड़ी बोली है। भाषा में ओज गुण है। अनुप्रास तथा पुनरुक्ति प्रकाश अलंकार का प्रयोग।

5. **किन्हीं तीन प्रश्नों के उत्तर अपेक्षित।** **3+3+3=9**

(क) **कनात :** पापाचार–दुराचार करने वालों को मौन होकर देखने तथा उनके काले कारनामों पर पर्दा डालने वाले।

बिस्तर : कुकर्म करने वाले लोगों को सहयोग देने वाले।

टेरियार कुत्ते : अपने स्वामी के स्वार्थ–सिद्ध करने में हिंसक ढंग से सहयोग देने वाले।

(ख) **लैंप पोस्ट जलाने का प्रतीकार्थ है**–चेतना जाग्रत करना–बुद्धिजीवी वर्ग अपनी विचार शक्ति से, ज्ञान के प्रकाश से, और लेखनी की ताकत से सामान्य जन में चेतना ला सकता है, समाज में फैले अन्याय–अत्याचार का विरोध कर सकता हैं।

(ग) विद्यापति द्वारा रचित 'पदावली' की इन पंक्तियों में राधा की विरहावस्था का अत्यंत मार्मिक चित्रण किया गया हे। राधा माधव–माधव करती हुई माधवमय हो गई है। स्वयं को भूल गई है। राधा माधव के रूप में अपने ही गुणों पर मोहित होने लगी है। सघन प्रेमानुभूति और विरह की चरम अवस्था का मार्मिक चित्रण किया गया है।

(घ) **भाव–सौंदर्य :** जय शंकर प्रसाद द्वारा रचित कविता 'अशोक की चिंता' की इन पंक्तियों में कवि ने विजयी अशोक के अंतर्द्वंद्वद्वारा विजय की निरर्थकता और मानवता की उपयोगिता का संदेश दिया है। युद्ध या हिंसा छोड़कर हमें सबके कलयाण–हेतु कर्म करने चाहिए। भावानुभूति की सघनता और व्यापकता का मार्मिक चित्रण।

6. किसी एक कवि का जीवन–परिचय अपेक्षित है :

अंक–विभाजन :

(1)	जीवन–परिचय	2
(2)	रचनाएं व साहित्यिक कार्य	2
(3)	काव्यगत विशेषताएं	2
	कुल अंक :	6

तुलसीदास का जन्म सन् 1532 ई. में बांदा जिले (उ. प्र.) के राजापुर नामक गांव में हुआ था। पिता आत्माराम दूबे और माता हुलसी थी। बाबा नरहरिदास ने उनका पालन–पोषण किया तथा उन्हे शिक्षा–दीक्षा प्रदान की।

रचनाएं : 'रामचरितमानस' 'पार्वती मंगल,' 'विनय पत्रिका' 'कवितावती,' 'दोहावली,' 'श्रीकृष्ण गीतावली,' 'रामलला नहछू'

काव्यगत विशेषताएं : अवधी एवं ब्रज–दोनों भाषाओं पर समान अधिकार। प्रबंध एवं मुक्तक–दोनों काव्य–शैलियों में समान दक्षता से रचनाएं की। दोहा, चौपाई, कवित्त सर्वया, छप्पय आदि छंदों का प्रयोग किया। श्रृंगार, वीर, वात्सल्य, शांत आदि सभी रसों का सुंदर प्रयोग इनकी रचनाओं में है। उपमा, रूपक, उत्प्रेक्षा आदि अलंकारों का सहज प्रयोग।

अथवा

रामधारी सिंह 'दिनकर' का जन्म बिहार राज्य के मुंगेर जिले में सिमरिया नामक गांव में 1908 ई. में हुआ था। पटना विश्वविद्यालय से बी.ए. (ऑनर्स) के बाद उच्च विद्यालय में प्रधानाचार्य के पद पर कार्य किया। 1952 ई. में संसद सदस्य मनोनीत हुए। भागलपुर विश्वविद्यालय के उपकुलपति और भारत सरकार के हिंदी सलाहकार रहे।

रचनाएं (काव्य) : 'रेणुका', 'हुंकार', 'कुरूक्षेत्र', 'रश्मिरथी', 'परशुराम की प्रतीक्षा', 'सामधेनी' और 'उर्वशी'। 'उर्वशी' ज्ञानपीछ पुरस्कार से सम्मानित काव्य हें

गद्य : 'संस्कृति के चार अध्याय', 'मिट्टी की ओर', 'शुद्ध कविता की खोज', 'अर्धनारीश्वर', 'काव्य की भूमिका'

काव्यगत–विशेषताएं : इनके काव्य में सौंदर्य, प्रेम और मानवीय संवेदनओं का मार्मिक अंकन किया गया है। भाषा में ओज और प्रवाह हैः व्यंग्यात्मकता और संवादात्मकता इनकी भाषा की अन्य विशेषताएं हैं।

7. अंक – विभाजन :

(1)	कथ्य	4
(2)	भाषा–शुद्धता	1
	कुल अंक :	5

'रंग भूमि' के कथानक की प्रमुख विशेषताएं : कथानक अत्यंत मौलिक है। इसमें गठन है। कथा की सभी घटनाएं क्रमब;द्ध व गुंफित हैं एवं उनमें रोचकता और जिज्ञासा अंत तक बनी रहती है। उपन्यास अपने उद्देश्य को स्पष्ट करने में पूर्णतया सफल है। मुख्य कथा और प्रासंगिक कथाएं सहजता से जुड़ी हुई हैं। पात्रों के मानसिक अंतर्द्वंद्वको प्रभावी ढ़ंग से अभिव्यक्त करने में कथावस्तु पूर्ण सक्षम है। कथाशिल्प या कथानक उद्देश्यपूर्ण है। कथानक की दृष्टि से 'रंगभूमि' एक सफल रचना है।

अथवा

'रंगभूमि' जन–जागरण का उपन्यास हे। सूरदास का अन्याय के विरूद्ध अपील करना, पूंजीवादी व्यवस्था की स्वार्थपरता और शोषण के विरूद्ध जागृति लाना, कुँअर साहब, रानी जाह्नवी, डॉ० गांगुली, इंद्रदत्त, विनय, सोफिया आदि के उदाहरण द्वारा समिति के विभिन्न कार्यों का उललेख करते हुए जन–जागरण ओर मानव–सेवा के उच्च आदर्शों का स्प्टीकरण अपेक्षित है।

8. सूरदास के माध्यम से लेखक ने समग्र गांधीवाद को ही नहीं वरन् स्वयं गांधी को साकार कर दिया है। सूरदास गांधीवादी विचारों के वाहक हैं। अहिंसा, सत्य, त्याग और धर्म का जो सुंदर समन्वय सूरदास के चरित्र में हुआ है, वह विलक्षण है। इन मानवेतर गुणों के साथ–साथा सहज मानवीय गुण–दोष भी उसके व्यक्तित्व में पाए जाते हैं। (जैसे–घीसू द्वारा तंग करने के प्रति लगाव, झोंपड़ी में आग लगने पर पैसों की थैली को तलाशना आदि उदाहरणों से सहज मानवीय गुण–दोषों का स्पष्टीकरण) सह्रदयता की भावना, अन्याय के विरुद्ध आवाज उठाना, साहसी व निर्भीक, औद्योगीकरण व पूंजीवादी व्यवस्था का तीव्र विरोधी तथा क्षमाशीलता आदि गुण उसमें विद्यमान हैं। 4+1=5

अथवा

प्रभु सेवक की चारित्रिक विशेषताएं–सह्रदयता की भावना, लोभ–लालसा से मुक्त, सौंदर्यवादी व आनंदवादी, अक्ष्छा कवि, उत्साही और साहसी, आदर्शवादी, स्वाभिमानी, संयम व त्याग की भावना, मानवता का पुजारी, विषमताओं से न घबराने वाला आदि। उपन्यास की घटनाओं के आलोक में इन विशेषताओं का स्पष्टीकरण अपेक्षित है।

9. 'रंगभूमि' उपन्यास भारतीय स्वतंत्रता संगाम की महागाथा है। 'रंगभूमि' उस समय के राजनीतिक संघर्ष को पाठकों के समक्ष बड़ी यथार्थता से प्रस्तुत करता हे। इसके साथ ही ग्रामीण तथा गर संस्कृतियों का संघर्ष भी यहां चित्रित हुआ है। इस उपरूास में देशी नरेशों के अत्याचार और पूंजीवादी दोषों का भी ह्रदयहारी चित्रण मिलता है। यह उपन्यास तत्कालीन देशकाल और वातावरण की यथार्थता को स्वीााविक रूप में चित्रित करता है। उस समय का सामाजिक, राजनीतिक तथा सांस्कृतिक परिवेश पाठकों के समक्ष साकार हो उठता है। (उपन्यास के अनेक उदाहरणों के आलोक में इन बिंदुओं का स्पष्टीकरण अपेक्षित है।) 5

अथवा

प्रेमचंद की भाषा में आम बोलचाल के शब्दों के साथ अंग्रेजी तथा उर्दू के शब्दों का प्रयोग भी मिलता है। इनकी भाषा सहज, स्वाभाविक, रोचक, प्रवाहमयी, पात्रानुकूल और प्रसंगानुकूल एवं

भावाभिव्यक्ति में पूर्णतः सक्षम है। मुहावरे एवं लोकोक्तियों का सहज प्रयोग मिलता है। व्यंग्यात्मकता, चित्रात्मकता व सृजनात्मकता का गुण इनकी भाषा–शैली में पाया जाता है। (इन बिन्दुओं पर उदाहरण–सहित प्रकाश अपेक्षित है।)

10. रीतिकालीन काव्य राज–दरबारों में लिखा गयाः इसिलए इसमें श्रृंगारिकता का आना स्वाभाविक था। श्रृंगार की प्रधानता के कारण; इसे "श्रृंगार काल" नाम दिया गया।

रीतिकालीन कविता की कोई तीन प्रवृत्तियां : लक्षण ग्रंथों का निर्माण, श्रृंगारिकता, भक्ति और नीति, नारी के प्रति विलासितापूर्ण दृष्टिकोण, प्रकृति का उद्यीपन रूप में चित्रण, आश्रयदाताओं की प्रशंसा आदि। (तीन प्रवृत्तियों का उदाहरण–सहित स्पष्टीकरण अपेक्षित हैं।) 1+3=4

अथवा

संत काव्य की तीन प्रवृत्तियाँ :

दो कवियो के नाम – (यहा दो संत कवियों के नामों का उल्लेख अपेक्षित)

प्रवृत्तियां : एकेश्वरवाद पर बल, निगुर्ण व निराकार ईश्वर पर विश्वास, रूढ़ियों और आडंबरों का विरोध, गुरु का महत्ता, रहस्य–भावना आदि।

प्रमुख कवि : 1. कबीरदास, 2. गुरु नानक देव

11. 'स्थूल के प्रति सुक्ष्म का विद्रोह' स्पष्टीकरण अपेक्षित – 1

चार प्रमुख विशेषताएं 4

छायावाद को स्थूल के प्रति सुक्ष्म का विद्रोह कहने का तात्पर्य है–स्थूल लौकिकता के विरूद्ध और जड़ता–रहित सूक्ष्म अलौकिक वेदना का चित्रण। इस व्यापक अलौकिक वेदना को नवीन आध्यात्मिक चेतना और सूक्ष्म अनुभूति की नवीन भगिमा के साथ नई शैली में व्यक्त करना।

प्रमुख विशेषताएं : वैयक्तिक अनुभूतियों की अभिव्यक्ति, वेदना एवं करुणा की भावना, प्रेम और सौंदर्य का वर्णन, राष्ट्रीय भावना, लाक्षणिकता एवं चित्रात्कता, प्रकृति का मानवीकरण, मानवतावाद, गीत शैली का प्रयोग आदि।

अथवा

प्रगतिवादी काव्य की चार विशेषताएं :

दो प्रमुख कवियों के नाम

प्रमुख विशेषताएं : शोषितों के प्रति सहानुभूति, शोषकों के प्रति विद्रोह, आक्रोश एवं घृणा, क्रांति यथार्थवादी दृष्टि, मानवतावादी दृष्टिकोण आदि।

कवियों के नाम : रामधारी सिंह दिनकर बालकृष्ण शर्मा 'नवीन', केदारनाथ अग्रवाल, शिवमंगल सिंह, सुमन, नरेंद्र शर्मा आदि।

12. **प्रेमचंद युगीन उपन्यास**–इस युग के उपन्यासकारों नेयुग–जीवन को वाणी प्रदान की। प्रेमचंद ने राजनीतिक व सामाजिक स्थिति का यथार्थ अंकन करते हुए आदर्शवादी समाधान प्रस्तुत किए। 'सेवासदन', 'रंगभूमि', 'कर्मभूमि', 'गोदान' इनके प्रमुख उपन्यास हैं। जयशंकर प्रसाद ने अपने उपन्यासों में समाज की अनेक समस्याओं और प्रश्नों को उभारा है। वृंदावनलाल वर्मा ने ऐतिहासक घटनाओं पर प्रेम–कथाएं प्रस्तुत की। 'उग्र' ने उपन्यासों में सामाजिक धरातल को आधार बनाया, भवती चरण वर्मा ने 'चित्रलेखा' में पाप और पुण्य की नवीन व्याख्या तथा पुनर्मूल्यांकन का स्तुत्य पयास किया है। जैनेद्र कुमार ने मनुष्य के अंतर्मन तथा अवचेतन मन की छानबीन के द्वारा मानव क्रियाकलापों के साथ संबंध स्थापित किया। अन्य प्रमुख उपन्यासकार–प्रसाद वृंदावनलाल वर्मा, चंडीप्रसाद ह्दयेश, विश्वीरनाथ शर्मा, उग्र, निराला आदि।

अथवा

प्रसाद युगीन हिंदी–नाटक : यह युग हिंदी नाटक–साहित्य का 'स्वर्ण युग' या उत्थान काल है। प्रसाद जी ने अपने नाटकों में भारतीय इतिहास की भूली–बिसरी कड़ियों को जोडने का प्रयास किया है। इनके नाटकों में प्राचीन भारतीय इतिहास की गौरवशाली संस्कृति का चित्रण हुआ है। इनके नाटकों में नाटकीय सौंदर्य का पूरा उत्कर्ष है, पात्रों के चरित्रांकन एवंवातावरण के चित्रण में इन्हें विशेष सफलता मिली है। इस युग में पाँच प्रकार के नाटकों की रचना हुई–ऐतिहासिक–पौराणिक नाटक, सामाजिक नाटक, प्रतीकात्मक नाटक, हास्य–व्यंगयप्रधान नाटक, रंगमंच से प्रभावित नाटक।

प्रसादयुगीन नाटककार : सर्व श्री लक्ष्मीनारायण मिश्र, हरिकृष्ण प्रेमी तथा गोविंद बल्लभ पंत के नाम उल्लेखनीय हैं।

13. **निबंध–लेखन** :

(i)	प्रस्तावना	1
(ii)	कथ्य–निरूपण और प्रस्तुति	6
(iii)	उपसंहार / निष्कर्ष	2
(iv)	भाषा–शुद्धता और शैली	3

कुल अंक : 12

14. (i) अत्यंत उच्च स्तरीय यअध्यात्मिक पुरुष और वैचारिक क्षमता से विहीन व्यक्ति ही बिना कर्म के रह सकते है।

गीता कहती है– यदि तुम स्वेच्छा से कार्य नहीं करोगे तो प्रकृति तुमसे बलपूर्वक कर्म कराएगी। 1

(ii) यदि सही भावना से कार्य किया जाए तो वह धार्मिक अर्थात आध्यात्मिक साधना का स्वरूप बन जाता है। 1

(iii) सही भावना से किया गया कर्म धार्मिक हो जाता है। 1

(iv) राजनीति में प्रवेश के इच्छुक व्यक्तियों को अपने कार्य आध्यात्मिक दृष्टिकोण लेकर, परोपकारिता का उच्चभाव लेकर करने चाहिए। 1

सन्माग्र पर चलते रहने के लिए परोपकारिता के भाव के साथ कार्य करते रहना चाहिए और प्रतिदिन आत्मविश्लेषण, अन्तर्दृष्टि और सतर्कता से अपना परीक्षण करते रहना चाहिए।

(v) किसी भी उपयुक्त शीर्षक पर शत–प्रतिशत अंक यानी 1 अंक दिया जा सकता है। 1

15. (i) अमेरिका द्वारा जापान पर गिराया गया अणुबम। 1

(ii) द्वितीय विश्व युद्ध के अंत में जापान के हिरोशिमा नगर पर। 1

(iii) बम–विस्फोट अचानक हुआ था और कुछ ही क्षणों में सब–कुछ नष्ट हो गया था। 1

(iv) प्रचंड गर्मी के कारण मनुष्य नष्ट हो गए, राख बन गए। 1

(v) झुलसे हुए पत्थरों और उजड़ी सड़कों के रूप में। 1

हिंदी (ऐच्छिक)

कक्षा–12

प्रतिदर्श प्रश्नपत्र–II

समय : 3 घंटे **पूर्णांक** : 100

1. अधोलिखित गद्यांशों में से किसी एक की सप्रसंग व्याख्या कीजिए : **10**

(i) इसी से धर्म, नीति और शिष्टाचार तीनों में क्रोध के निरोध का उपदेश पाया जाता है। संत लोग तो खलो के वचन सहते ही हैं, दुनियादार लोग भी न जाने कितनी ऊंची–नीची पचाते रहते हैं। सभ्यता के व्यवहार में भी क्रोध नहीं तो क्रोध के चिह्न दबाए जाते हैं। इस प्रकार का प्रतिबंध समाज की सुख–शांति के लिए बहुत आवश्यक है। पर इस प्रतिबंध की भी सीमा है। यह परं–पीड़कोन्मुख तक नहीं पहुंचता।

(i) आजकल भी ऐसे विद्वान मिल जाएंगे जो जानते बहुत हैं, करते कुछ भी नहीं। करने वाला इतिहास–निर्माता होता है, सिर्फ सोचते रहने वाला इतिहास के भंयकर रथचक्र के नीचे पिस जाता है। इतिहास का रथ वह हाकता है जो सोचता है और सोचे हुए को करता भी है।

2. निम्नलिखित प्रश्नों के संक्षिप्त उत्तर दीजिए : **4+4+4=12**

(i) भारत और चीन आस्ट्रेलिया की अपार संपत्ति और अमित भूमि से वंचित क्यों रह गए? राहुल सांकृत्यायन के विचारानुसार कारण बताइए।

(ii) 'मंत्र' कहानी के आधार पर बताइए कि कैलाश ने मृणालिनी के किस आग्रह को अंततः स्वीकार कर लिया और क्यों?

(iii) 'व्यक्ति की एक झलक' के अनुसार जयशंकर प्रसाद और प्रेमचंद किस प्रकार एक दूसरे के पूरक हैं?

(iv) 'दिल से गए दिल्ली में' के आधार पर स्पष्ट कीजिए कि हाशिए में टिके लेख किन्हें कहा गया है? वे जड़ों से अपना मत कैसे बनाए रखते हैं?

3. निम्नलिखित में से किसी एक प्रश्न का उत्तर जीवन–मूल्यों के प्रकाश में दीजिए : **3**

(i) पर्यावरण–रक्षण के आंदोलन की चर्चा करते हुए सुंदरलाल बहुग्रणा उपभोक्ता संस्कृति और सत्तासीन लोगों को पर्यावरण–विनाश के लिए जिम्मेदार कयों ठहराते हैं?

(ii) 'मेरी जीवन यात्रा : दो चित्र' के आधार पर बताइए कि लेखक ने पहले चित्र में अध्ययन काल की किस असह्य पीड़ा का वर्णन किया है?

4. **निम्नलिखित काव्यांशों की सप्रसंग व्याख्या कीजिए और उसके काकसौंदर्य पर भी प्रकाश दीजिए :** **5+5=10**

जमुना के तीर बहै सीतल समीर जहां
मधुकर करत मधुर मंद सोर हैं।
कवि मतिराम तहां छवि सौं छबीली बैठी
आंगन तैं फैलत सुगंध के झकोर हैं
पीतम बिहारी की निहारिबे को बाट ऐसी
चहुं ओर दीरघ दृगन करि दौर हैं।
एक ओर मीन मनों एक ओर कंजपुंज
एक ओर खंजन चकोर एक ओर हैं।

अथवा

अभी पड़ा है आगे सारा यौवन
स्वर्ण–किरण कल्लोलों पर बहता रे यह बालक मन
मेरे ही अविकसित राग से
विकसित होगा बंधु दिगंत
कभी न होगा मेरा अंत।

5. **निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्हीं तीन के उत्तर दीजिए :** 3+3+3=9

(i) गोरी सोवे सेज पर, मुख पर डारे केस
चल खुसरो घर आपने रैन भई चहुँ देस।
अमीर खुसरो के उक्त दोहे का अप्रस्तुत अर्थ स्पष्ट कीजिए।

(ii) 'ओ मेरे मन' कविता में जीवन के प्रति कवि के क्षोभ का क्या कारण है?

(iii) "ये क्षणिक चल रहा राग–रंग
जलता है यह जीवन पतंग"
उपर्युक्त पंक्तियों का आशय स्पष्ट कीजिए।

(iv) लो कब की सुधियां जग्री, आह
शिशु घन–कुरंग
पुरवा सिहकी फिर दीख गए
शिशु घन–कुरंग

शशि से शरमाना सीख गए

शिशु घन–कुरंग

उपयुक्त पंक्तियों का भाव और शिलय सौंदर्य स्पष्ट कीजिए।

6. **गजानन माधव मुक्तिबोध अथवा मलिक मुहम्मद जायसी का जीवन–परिचय देते हुए उनकी रचनाओं और काव्य–शिल्य की विशेषताओं का उल्लेख कीजिए।** 6

7. **'रंगभूमि' उपन्यास आज के संदर्भ में भी प्रासंगिक है। कथानक के आधार पर टिप्पणी कीजिए।** 5

8. **'रंगभूमि' के कथानक की चार विशेषताओं पर प्रकाश डालिए।** 5

9. **'रंगभूमि' उपन्यास के उद्देश्य पर प्रकाश डालिए।** 5

अथवा

'रंगभूमि' उपन्यास की भाषा और शैली की दो–दो विशेषताओं का सादाहरण उल्लेख कीजिए।

10. **ज्ञान–मार्गी तथा प्रेम–मार्गी निर्गुण भक्ति–काव्य का अंतर स्पष्ट करते हुए प्रेम–मार्गी निर्गुण भक्ति की किन्ही तीन विशेषताओं का उल्लेख कीजिए।** 4

11. **प्रगतिवाद अथवा नई कविता की चार प्रमुख प्रव्त्तियों का विवेचन कीजिए। किन्ही दो कवियों का उल्लेख करना आवश्यक है।** 5

12. **स्वातंत्रयोत्तर हिंदी–निबंध अथवा हिंदी–नाटक के विकास का वर्णन कीजिए।** 4

13. **निम्नलिखित में से किसी एक विषय पर लगभग तीन सौ शब्दो में निबंध लिखिए :** 12

(क) लोकतंत्र में चुनाव

(ख) हमारी संस्कृति के परिचायक हमारे पर्व–त्योहार

(ग) निःस्वार्थ सेवा

(घ) लोभी और लालची मन

(ङ) हिंदी–साहित्य : पाठकों का अभाव

14. **अवतरण को ध्यान से पढ़िए और तत्संबंधी प्रश्नों के उत्तर दीजिए :**

हिंदी रंगमंच की गतिविधियां बढ़ रही हैं। रंग–महोत्सव के अवसर पर रंगमंच पर नाटाकें का प्रदर्शन होता है। हिंदी–रंगमंच से अनेक अनूदित ना्य रचनाएं प्रस्तु की जा रही है। हिंदी में मौलिक रंग–नाटकों का आभाव है। रंगमंच की मांग पर हिंदी–लेखकों ने भी लिखना शुरू किया है। अधिकांश लेखक–कहानीकार जब नाटक की रचना करते हैं तो कई बार विधगत भेद भुला देते हैं। कहानी की वस्तु को पात्राों के सपाट संवादों में कह देने से वह कथावस्तु नाटक नहीं बन जाती। कविता या संगीत आदि के माध्यम से काव्य को संवाद–शैली में प्रस्तुत करने पर भी काई रचना नाटक नहीं हो जाती। रंग नाटक वही होता है, जिसे मंच पर भली–भांति खेला जा सके।

नाटक का अपना विधागत स्वरूप होता है। यह कहानी अथवा कविता के स्वरूप से भिन्न होता है। अभिनय–प्रदर्शन, मंच–सज्जया और नाटकीय कार्य–व्यापार की प्रस्तुति से रंग–नाटक खिलता है। अतः रंग–नाटक की रचना को रंग–वस्तु की अपेक्षाओं के रूप में ही जाना–पहचाना जा सकता है। कहानी का रूपांतरण हो या मौलिक रचना–नाटक अपने रूप और रंग से देश में अलग साहित्यिक सत्ता रखता है।

(i) हिंदी–रंगमंच पर अनूदित नाटकों की प्रस्तुति का क्या कारण है? 1

(ii) कहानी के पात्रों के सपाट संवादों से रंग–नाटक क्यों नहीं बनता? 1

(iii) रंग–नाटक का तात्पर्य क्या है? 1

(iv) रंग–नाटक किस प्रकार खिलता है? 1

(v) रंग–नाटक की वस्तु को केसे परख–पहचाना जा सकता है? 1

15. अधोलिखित काव्यांश को ध्यान से पढ़िए तथा तत्संबंधी प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

कलम आज उनकी जय बोल
पीकर जिनकी लाल शिखाएँ
उगल रहीं लू लपट दिशाएँ
जिनके सिंहनाद् से सहमी
धरती रही अभी तक डोल।
कलम आज उनकी जय बोल।।
अंध चकाचौंध का मारा,
क्या जाने इतिहास बिचारा।
साक्षी हैं जिनकी महिमा के–
सूर्य, चंद्र, भूगोल, खगोल।
कलम आज उनकी जय बोल।

(i) स्वाधीनता संग्राम के शहीदों के सिंहनाद से आज भी धरती क्यों डोल जाती है? 1

(ii) 'क्या जाने इतिहास बिचारा' कहकर कवि इतिहास को युग का दपर्ण क्यों नहीं मानता? 1

(iii) स्वाधीनता के वीर बलिदानियों की महिमा के साक्षी सूर्य, चंद्र, भूगोल, खगोल क्यो बताए गए हैं? 1

(iv) कलम से किनकी जय बोलने का आग्रह किया गया है और क्यों ? 1

(v) काव्यांश के शैली–सौंदर्य पर टिप्पणी कीजिए। 1

हिंदी (ऐच्छिक)

कक्षा–12

प्रतिदर्श प्रश्नपत्र–II

अंक–योजना उत्तर–संकेत और मूल्य–बिंदु

प्र०सं०	अपेक्षित उत्तर–संकेत/मूल्य बिंदु	अंक–विवरण/योग

1. (केवल एक गद्यांश की सप्रसंग व्याख्या अपेक्षित)

अंक विभाजन–

(i)	संदर्भ–कथन, रचनाकार और रचना का उल्लेख	½+½ = 1
(ii)	पूर्वापर संबंध/प्रसंग–कथन	1
(iii)	समुचित स्पष्ट व्याख्या	5
(iv)	भाषा–शैली पर टिप्पणी	3
		कुल अंक : 10

(क) (i) रामचंद शुक्ल–'क्रोध'

(ii) लेखक क्रोध के स्वरूप तथा उसके अन्य मनोविकारां से संबंध का विश्लेषण करते हुए लोक–कल्याण की दृष्टि से क्रोध की सार्थकता और उपयोगिता पर प्रकाश डालते हैं, कयोंकि क्रोध को शांति भंग करनेवाला मनोविकार माना गया है।

(iii) शुक्ल जी मानते हैं कि धर्म, नीति और शिष्टाचार के अंतर्गत क्रोध के निरोध का आदेश है। संत स्वभाव के लोग दुष्टों के दुर्व्यवहार को सह लेते है। समझदार सांसारिक लोग भी ऐसे व्यवहार पर आग नहीं उगलते। सीयता का तकाजा है कि क्रोध का प्रदर्शन न करें। समाज में इस प्रकार की पाबंदी से अमन–चैन रहता हैं यह सिीति समाज के लिए जरूरी है। शुक्ल जी इस पाबंदी की भी एक सीमा मानते हैं। इसका लाभ यह है कि यह दूसरों में क्रोध नहीं भड़काती। उन्हें कष्ट नहीं देती।

विशेष–टिप्पणी : तत्सम शब्द–प्रधान शैली विषयानुकूल है; सारगर्भित वाक्यों का प्रयोग निबंध में संक्षिप्तता लाता है, 'कितनी ऊंची–नीची पचाते हें, में पूर्वी हिंदी का प्रयोग।

(ख) (i) हजारी प्रसाद द्विवेदी, 'भीष्म को क्षमा नहीं किया गया'

(ii) व्यक्तित्व व्यंजक और आत्मपरक शैली में द्विवेदी जी भीष्म पितामह के चरिण–विश्लेषण से इतिहास के एक सिद्धांत– विशेष की स्थापना करते हैं

महाभारत काल की बात छोड़िए, आजकल भी बहुत से सूचना–संपन्न ज्ञानी और विद्वान मिल जाते हैं। ये लोग सोचते बहुत–कुछ हैं, लेकिन करते कुछ भी नहीं। इतिहास–निर्माता

का लक्षण यह है कि वह करता है, सिर्फ सोचता नहीं। इतिहास का निर्माता और संचालक वही होता है जो अच्छी तरह विचार करता है और विचार किए हुए को करता भी है। विचार को कर्म से जोड़कर चलता है। इतिहास का रथ केवल वही खींचता है। विचार–विद्या और ज्ञान का अपार भंडार रखने वाला यदि कुछ करता नहीं है तो इतिहास के पहिए के नीचे कुचल दिया जाता है। भीष्म– में अपार विद्या और ज्ञान था, लेकिन कृतित्व से जुड़ाव न होने के कारण वे इतिहास–निर्माता न बन सके।

विशेष–टिप्पणी : 'समय की शिला', 'रथ और रथचक्र' शब्दों के माध्यम से अभिव्यक्ति–कौशल चमक उठा है। 'रथचक्र के नीचे पिस जाना' आदि व्यंजनापरक अभिव्यक्ति हैं। आजकल के संकट में महाभारत के इस चरित्र ने सम–सामयिक औचित्य प्रदान किया हे। यह भाषा–शैली का नया रूप है तर्क–प्रधान, विश्लेषणपरक शैली है।

तीनों प्रश्नों के उत्तर अपेक्षित हैं : 4+4+4=12

(i) भारत और चीन आस्ट्रेलिया की अपार संपत्ति और अमित भूमि से इसलिए वंचित रह गए, क्योंकि वे घुमक्कड़ी धर्म छोड़ बैठे और भूल गए कि उनके पास कितना संपन्न क्षेत्रा खाली पड़ा हे। भारत और चीन यूरोपीयों की अपेक्षा आस्टेलिया के निकट थे, किन्तु स्वभाव से घुमक्कड़ यूरोपीयों ने आस्ट्रेलिया को हथिया लिया और भारत–चीन अपने में ही सिमटे रहे।

(ii) कैलाश सर्प–प्रदर्शन–कला का माहिर कलाकार था। उसने कितने ही सर्प पाल रखे थे मृणालिनी उससे अकसर आगह करती–तुम्हारे सांप कहां हैं?जरा मुझे दिखा दो। वह कल दिखाने का सुझााव देकर टाल देता था। एक दिन कई मित्रों की उपस्थिति में उसने आग्रह किया तो कैलाश ने टाल दिया। मृणालिनी की झेंपी हुई सूरत देखकर उसे लगा कि मृणालिनी को उसका इंकार बुरा लगा है। कैलाश ने मृणालिनी और अन्य मित्रों के सामने सर्प–कला–प्रदर्शन का परिचय दिया।

(iii) प्रेमचंद का साहित्य दुःख के आधार पर स्थित है। प्रेमचंद ने आनंद के रचनात्मक पक्ष पर अधिक ध्यान नहीं दिया। इसके विपरीत प्रसाद सुसंस्कृत, स्व्स्थ नारी और पुरुष–शक्ति का रहस्य प्रकट करते हैं। इसलिए प्रसाद शक्ति के साधक हें। इस प्रकार प्रसाद और प्रेमचंद एक दूसरे के पूरक हैं

(iv) जो लोग बाहर गाँव–देहात से आकर दिल्ली में काम कर अजीविका कमाते हैं उन्हें हाशिए में टिके लोग कहा गया है। वे साल में एक बार फसल काटने के बहाने (चाहे वह फसल अपनी न हो) अपनी ज़मीर तक जाते हैं और तरोताज़ा होकर लौटते हैं।

3. प्रश्न के उत्तर में क्रम से 3 बिंदुओं का उल्लेख आवश्यक है। प्रत्येक बिंदु पर एक–एक अंक। 1+1+1=3

(i) उपभोक्ता संस्कृति के लिए नई वस्तुओं का उत्पादन हो रहा है। उन्हें एन आकर्षक पैकेटों में बेचा जाता है। इससे नए–नए कारखाने खुल रहे हैं और वातावरण में विष घुल रहा है। सत्ता से जुड़े लोग पूरी तंत्र पर हावी हे। उनके हाथ में राजनीतिक, आर्थिक शक्तियां हैं, वे विकास के नाम पर पर्यावरण–विनाश पर तुले हैं।

(ii) नीची जाति के बच्चों को पढ़ने पर भी अपमान की असह्य पीड़ा से गुजरना पड़ता है। शिक्षा और जागरूकता द्वारा ही इससे मुक्ति पाई जा सकती है।

4. **किसी एक काव्यांशों की सप्रसंग व्याख्या अपेक्षित है :**

अंक–विभाजन इस प्रकार है :

(i)	रचनाकार और रचना का उल्लेख	½+½=1
(ii)	पूर्वापर संबंध/ प्रसंग–कथन	1
(iii)	काव्यांश की व्याख्या	3
(iv)	भाषा–शैली और काव्य–सौंदर्य पर टिप्पणी	5
		कुल अंक : 10

(i) मतिराम : 'सौंदर्य और श्रृंगार'

(ii) यमुना के किनारे अपने प्रियतम (कृष्ण) की प्रतीक्षा में बैठी नायिका राधा के आकुल नेत्रों की चंचलता का चित्रण महाकवि मतिराम करते हैं

(iii) यमुना तट पर शीतल–मंद समीर बह रहा है। मधुकर अपने अधुर शेर से वातावरण को मधुर बना रहे हैं। मतिराम कवि कहते हैं कि ऐसे सुखद समय में अपनी संपूर्ण सुंदरता के साथ सौंदर्यश्री राधा बैइी हैं। उनके अंगों से सुग्रध के झोंके फैल रहे हैं। राधा जी अपने प्रियतम ब्रज–बिहारी श्रीकृष्ण का दश्रन पाने के लिए अपने बड़े–बड़े नेत्रों को इधर–उधर दौड़ा रही हैं। उनके चंचल नेत्र कभी चंचलता के कारण मछली जैसे, कीाी संदरता के कारण कमल जैसे, कभी कालिमा के कारण खंजन जैसे, तो कीाी एकाग्रता के कारण चकोर जैसे दृष्टिगोचर होते हैं।

विशेष : कवित्त छंद अनुपम है। अनुप्रास अलंकार का प्रभाव सर्वत्र है। अंतिम पंक्तियों में उत्प्रेक्षा अलंकार का प्रयोग है।

अथवा

(i) सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' – 'ध्वनि' कविता

(ii) निराला अपने जीवन में निराशा और कठिनाईयों से जूझते रहे। उनके इस जीवन पर लोगों ने नुक्ताचीनी की। निराला अपने साहित्यिक खेल की पारी समाप्त कर चुके थे। किन्तु कवि अपने जीवन का इसे प्रथम चरण मानते हैं। वे नहीं मानते कि यहां मृत्यु की उपस्थिति है।

अभी आगे सूंर्ण जीवन पड़ा हे। सुविधा–असुविधा, आशा–निराशा, सुख–दुःख की चिंता किए बिना मेरा यह बालक–मन कनक किरणों से खेलता रहता है। दिशाएँ मेरे ही अविकसित राग से विकसित होंगी। कवि का रचनाधर्मी कृतितव ही विकास का शंखनाद करेगा। उससे दसों दिशाएं गूंजेंगी। जो समझ रहे हैं कि मेरा अंत निकट हैं, वे समझ लेंकि मेरा अंत अभी क्या, कभी नहीं होगा।

विशेष : 'स्वर्ण' किरणों से खेलता बालक मन' कवि के विराट व्यक्तित्व की व्यंजना करता है। कवि अपने प्रयत्न से संसार में नव जीवन का संचार करने का आतम विश्वास प्रकट करता है। नव गीत की शैली में रचित यह गी संगीतात्मकता लिए है। तत्सम शब्दावली का ठाठ बराबर बना हुआ है।

5. **किन्हीं तीन का उत्तर अपेक्षित** **3+3+3=9**

(i) प्रस्तुत दोहा अमीर खुसरों ने अपने गुरु पीर निजामुद्दीन औलिया के निधन पर कहा था। सूफी संत भी पीर को पैगंबर का दर्जा देते हैं। अध्यात्म में गौरी ब्रह्म स्वरूप है जो जग के प्रणियों से ओझल है। चेतना पर आवरण पड़ गया है। ऐसे में खुसरों अपने घर लौटने की बात भी अध्यात्म स्तर पर कहते है। गुरु गए तो प्रकाश गया। अब तो चारों ओर अंधकार ही है। अतः खुसरो के जीवन का अब कोई औचित्य नहीं रहा।

(ii) क्षोभ के अनेक कारण हैं। जीवन स्वार्थी हो गया। हम संवेदनहीन हो गए हैं। परोपकार से मुंह मोड़ने लगे हैं। लोक–हित या करूणा को अपने–अपने जीवन से हमने निकाल दिया है। तर्क के साथ विचार करना छोड़ दिया है।

(iii) संसार की नश्वरता और क्षणिकता का उल्लेख/सांसारिक सुखों को क्षणिक बताया गया है। जीवन पतंगे की भांति संसार के सुखों की आंच में झुलस कर समाप्त हो जाता है।

(iv) 'लो कब की सुधियां......................शिशुघन कुरंग।

भाव–सौंदर्य : यहा बादलों को चंचल हिरण–शावक माना गया है। बादल पूर्वा के कारण लुक–छिप रहे हैं और विभिन्न रूपों में दिखाई पड़ रहे हैं।

शिल्प–सौंदर्य : अनुप्रास और रूपक अलंकार।

सुधियों से तुलना : अप्रस्तुत से प्रस्तुत की तुलना।

बादलों के बदलते रूपों और उनकी चंचलता का सहज चित्रण।

6. **किसी एक कवि का साहित्यिक परिचय अपेक्षित है।**

अंक–विभाजन इस प्रकार है :

सामान्य जीवन–परिचय 2

रचनाओं का उल्लेख2

काव्य शिल्प–विवेचन 2

कुल अंक : 6

- **गजानन माधव मुक्तिबोध**

(i) मध्यप्रदेश, गवालियर जनपद के श्योपुर गांव में 1917 में जन्में, पिता पुलिस सब इंस्पेक्टर। तबादलों के कारण पढ़ाई टूटती–जूड़ती रही। 1954 में नागपुर विश्वविद्यालय से एम. ए. हिंदी। पिताजी से ईमानदारी, न्यायप्रियता और इच्छाशक्ति की प्रेरणा। 'नया

खून' पत्रिका का संपादन। दिग्विजय महाविद्यालय राजनांदगांव, मध्यप्रदेश में अध्यापन। हिंदी–विभाग के अध्यक्ष। 1964 में मृतयु।

(ii) 'चांद का मुंह टेढ़ा है, 'भूरी–भूरी खाक धूल' तथा छह खंडों में 'प्रकाशित–मुक्तिबोध रचनावली।'

(iii) नई कविता का प्रमुख कवि, विशिष्ट काव्य–शिल्प, बेहतर समाज–निर्माण की आकांक्षा, बिंब और प्रतीकों का कविता में प्रयोग, फैंटेसी के शिल्प–विस्मय का प्रयोग। लंबी कविता रचना के जनक। विडंबनाओं और बिदूपताओं का चित्रण।

अथवा

- **मलिक मुहम्मद जायसी**

(1482–1542) उत्तरप्रदेश, अमेठी के निकट जायस के रहने वाले। पहुंचे हुए फकीर सैयद अशरफ और शेख बुरहान के शिष्य। सूफी–मार्गी काव्य के सर्वश्रेष्ठ कवि।

रचनाएं : 'पदमावत्' 'अखरावट' और ' आखिरी कलाम'।

फारसी और संस्कृत शब्दों से युक्त ग्रामीण अवधी भाषा, मसनवी शैली, दोहा–चौपाई छंद, लोक–जीवन की व्यापक पैठ है। उपमा, रूपक, लोकोक्ति और मुहावरों का भरपूर प्रयोग। काव्य–भाषा पर लोक–संस्कृति का प्रीााव। 'पदमावत' प्रेम काव्य–परंपरा का सर्वश्रेष्ठ प्रबंध काव्य है।

7. रंगभूमि आज के संदर्भ में भी प्रासंगिक है। औद्योगीकरण बढ़ता जा रहा है और उसके लिए किसानों की भूमि ले ली जाती है। किसानों का विरोध अनसुना रह जाता है। शक्ति संपन्न लोग हथकंडे अपनाकर विरोध को दबा देते हैं। (कुल चार बिंदु 4 अंक + भाषा 1 अंक) 5

8. **सूरदास का चरित्र–चित्रण** : निम्नलिखित में से किन्ही चार विशेषताओं का सोदाहरण उल्लेख : 4+1=5

'रंगभूमि' का प्रमुख पात्र है – सूरदास

(i) क्षीण–काय अंधा भिखारी

(ii) विवाह के प्रति उदासीन

(iii) पुश्तैनी जमीन के प्रति असीम मोह

(iv) औद्योगीकरण का विरोधी

(v) भतीजे मिठुआ के प्रति असीम प्यार का भाव

किन्हीं चार विशेषताओं पर प्रकाश डालना अपेक्षित।

अथवा

रानी जाह्नवी की किन्हीं चार विशेषताओं का उल्लेख।

(i) एक आदर्श पात्र है। बनारस के धनी क्षत्रिय जमींदार की अर्धांगिनी।

(ii) प्रदर्शन–प्रिय

(iii) पति–परायणा

(iv) अतिशय महत्वाकांक्षी

(v) निरंतर सक्रिय

(vi) स्वास्थ्य–निर्माण में सक्षम

(vii) सौंदर्य, शील और भावमय, आकर्षक व्यक्तित्व आदि में से किन्हीं चार विशेषताओं पर प्रकाश।

9. (क) **'रंगभूमि' सोद्देश्य रचित उपन्यास है। निम्नलिखित में से किन्हीं दो का उल्लेख अपेक्षित :**

(i) जीवन को खेल समझने की धारणा को प्रतिष्ठित करना।

(ii) देशोद्धार हेतु जन–जाग्रति पैदा करना।

(iii) गांधीवाद के समर्थन तथा क्रांतिकारियों की गतिविधियों के चित्रण आदि पर प्रकार 4+1=5

(ख) **'रंगभूमि' की भाषा की 4 विशेषताएं :**

शैली की दो विशेषताएं

भाषा : शब्दावली के प्रयोग की दृष्टि से तत्सम, तद्भव, देशज, उर्दू–फारसी, अंग्रजी शब्दों का प्रयोग, मुहावरे, लोकोक्ति तथा सूक्तियों के प्रयोग।

चित्रात्मक भाषा, पात्रानुकूल, अलंकारिक भाषा आदि विशेषताओं में चार का उल्लेख।

शैली : सजीव, प्रवाहपूर्ण, भावपूर्ण, आदि में किन्ही दो का उल्लेख अपेक्षित।

10. (i) ज्ञान मार्गी और प्रेम मार्गी निर्गुण भक्ति के अंतर का स्पष्टीकरण अपेक्षित। 1

(ii) ज्ञान मार्गी अथवा प्रेम मार्गी भक्ति की विशेषताओं/ प्रवृत्तियों में से किन्ही 3 का उल्लेख। 3

11. (i) प्रगतिवाद की किन्ही चार प्रमुख प्रवृत्तियों की विवेचना तथा दो कवियों का उल्लेख : 4

(ii) विवेचन की भाषा–शैली 1

अथवा

(i) 'नई कविता' की चार प्रमुख प्रवृत्तियों की विवेचना तथा दो कवियों का उल्लेख :

(ii) विवेचन की भाषा–शैली

12. (i) स्वातंत्र्योत्तर हिंदी–निबंध की विकास–यात्रा का वर्णन – 3

(ii) वर्णन की भाषा शैली – 1

13. लगभग 300 शब्दों में निबंध–लेखन अपेक्षित है।

अंक – विभाजन इस प्रकार है:

(i)	भूमिका	1
(ii)	विषय–प्रतिपादन (कम से कम चार बिंदुओं का तर्क–संगत प्रतिपादन)	8
(iii)	उपसंहार	1
(iv)	विषय–प्रतिपादन शैली / समग्र प्रभाव	1
(v)	शुद्ध भाषा	1

कुल अंक : 12

14. प्रत्येक प्रश्न के सही उत्तर पर 1 अंक दें — कुल अंक : 5

(i) हिंदी रंगमंचीय नाटकों में मौलिक नाटकों की कमी।

(ii) रंग नाटक संवाद के अभिनय प्रदर्शन से बनता है। कथा–संवाद कहने की कला–मात्र होते हैं।

(iii) रंग–नाटक वह कहलाता है, जिसे मंच पर खेला जा सके।

(iv) रंग–नाटक अभिनय, मंच–सज्जा, तथा नाटकीय कार्य–व्यवहार की प्रस्तुति से खिलता है।

(v) रंग–नाटक की वस्तु को रंगवस्तु की अपेक्षाओं के रूप में परखा–पहचाना जा सकता है।

15. प्रत्येक उत्तर के लिए एक–एक अंक। — कुल अंक : 5

(i) आज भी स्वाधीनता के शहीदों की वीरगाथा रोमांचित कर देती है। उनके सिंहनाद से आज भी पृथ्वी काप जाती है। विदेशी सत्ता उसका ताप नहीं सह पाईं

(ii) कवि की मान्यता है कि इतिहास में स्वार्थ–प्रेरित कुछेक लोगों का वर्णन मिलता है। सच्चे वीरों के वृत्तांत इतिहास में नहीं मिलते। इतिहास युग का दपर्ण नहीं है। इसीलिए इतिहास को बेचारा व अनजाना कहा है।

(iii) स्वतंत्रता के शहीदों के चश्मदीद गवाह सूरज, चांद, जमीन और आकाश इसलिए बताए हैं, क्योंकि उन्होंने सत्य देखा है और वे इतिहास की भांति अंधे नहीं हैं।

(iv) कवि चाहता है कि लेखनी उन बलिदानी वीरों की जय–जयकार करे, जिन्होंने स्वतंत्रता की बलिवेदी पर प्राण निछावर कर दिए और उनके बलिदान की आग से आज भी अंग्रेजी सत्ता थर्राती है।

(v) इस ओज गुण संपन्न काव्यांश में लक्षणा शब्दशक्ति का प्रभावी प्रयोग हुआ है। तत्सम शब्दों का पर्याप्त प्रयोग। भाषा प्रवाहपूर्ण। देश–प्रेम की भावना के चित्रण में भाषा–शैली सफल हुई है।